स्थापित 1968

अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा का मुख पत्र

₹5

श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका

सामाजिक चेतना एवं जागरुकता के लिये सजग मासिक पत्रिका

(पल्लीवाल, जैसवाल, सैलवाल सम्बन्धित जैन समाज)

अंक 7 ✦ प्रकाशन तिथि : 25 जनवरी 2021 ✦ वर्ष 9 ✦ कुल पृष्ठ 44 ✦ मूल्य ₹5

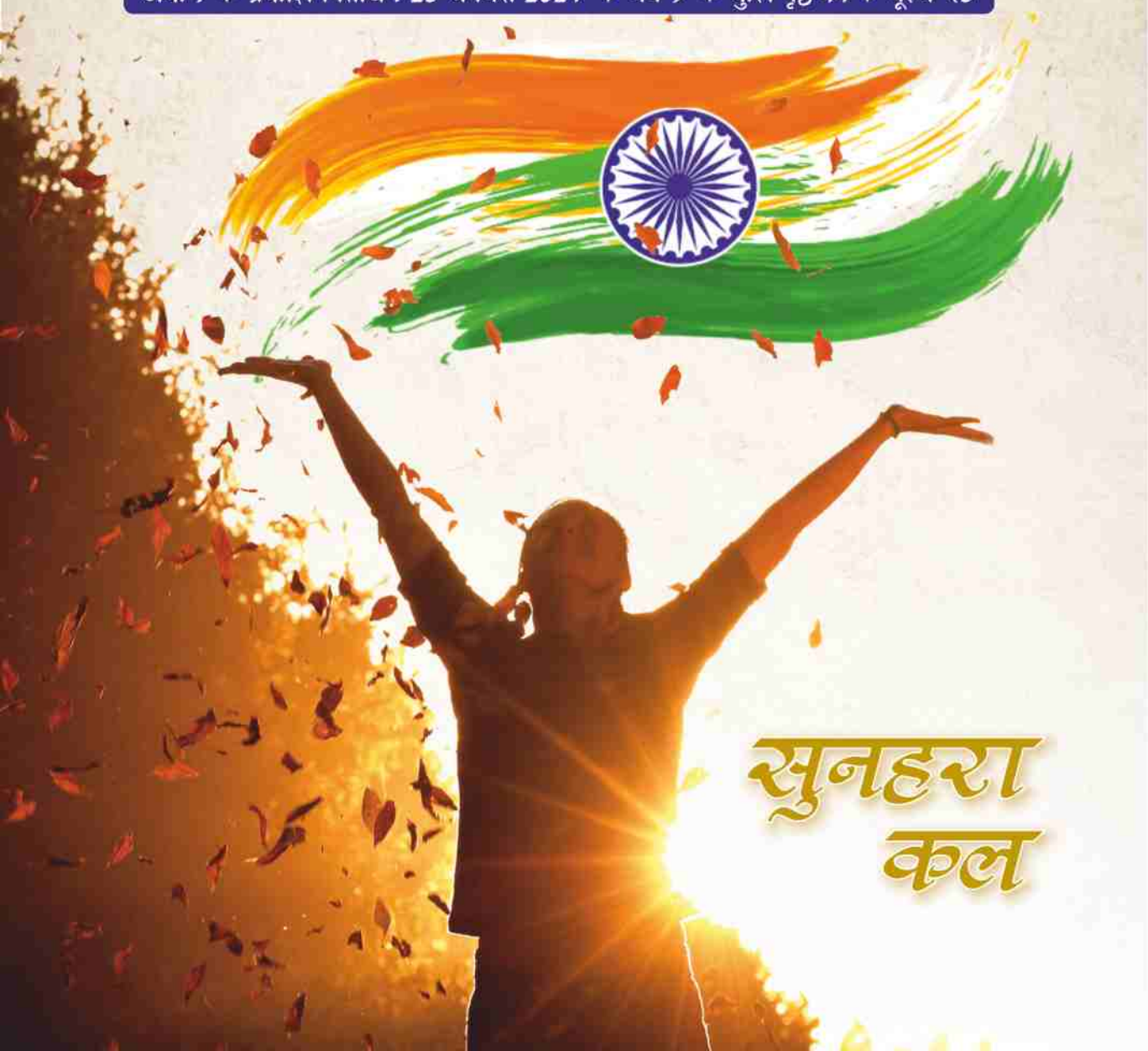

सुनहरा कल

स्व. श्री स्वरूप चन्द जी जैन (मारसन्स)

(19 अगस्त 1927 – 31 अगस्त 2016)

जैन समाज के लिये आपका योगदान एवं समाज को एक सूत्र में बांधे रखने का अन्तिम सन्देश सदैव स्मरणीय रहेगा।

आपका प्रेरणामय जीवन हमारे लिए सदैव पथ प्रदर्शक रहेगा।

MARSON'S

ISO 9001:2000 CERTIFIED COMPANY

समस्त परिवारीजन
स्टाफ एवं कर्मचारीगण

MARSON'S ELECTRICAL INDUSTRIES

(Prop. MEI Power Pvt. Ltd.)

www.marsonselectricals.com • E-mail : info@marsonselectricals.com

1/189, Delhi Gate, Civil Lines, Agra-282002 (India)

Ph : +91-562-2520027, 2850812 • Fax : +91-562-2851306

Works :

Mathura Road, Artoni, Agra - 282007 (India)

Ph : +91-2641448, 2642327-28 • Fax : +91-562-2641435

TRANSFORMERS EXPORTED TO OVER 15 COUNTRIES

सामाजिक चेतना एवं जागरुकता के लिये सजग

श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका

अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा का मुख पत्र

(पल्लीवाल, जैसवाल, सैलवाल सम्बन्धित जैन समाज)

Email : shripalliwaljain.patrika@gmail.com

मूल्य ₹ 5/-

अंक 7 ✦ 25 जनवरी 2021 ✦ वर्ष 9

कुल पृष्ठ : 44

पूर्व प्रकाशन मथुरा से, सम्प्रति जयपुर से प्रकाशित

महासभा पदाधिकारी

श्री आर.सी. जैन *(अध्यक्ष)*
(सेवानिवृत्त आई.ए.एस.)
एन-19, आदिनाथ नगर, जे.एल.एन. मार्ग,
जयपुर (राज.)-302018
मोबा. : 9414279070, 9829999335
E-mail : rcjainras@gmail.com

श्री राजीव रतन जैन *(महामंत्री)*
301-ए, सुख सागर अपार्टमेन्ट, 4, जानकी नगर मेन,
इन्दौर (म.प्र.)-452001, मोबा.: 9425110204
E-mail : jainrajeevratan@gmail.com

श्री अजीत जैन *(अर्थमंत्री)*
1द39, काला कुंआ हा.बोर्ड, अलवर (राज.)-301002
फोन : 0144-2360115, मोबा.: 9413272178
E-mail : akjain2021@yahoo.in

पत्रिका प्रबन्ध एवं सम्पादक मण्डल

डॉ. अनुपम जैन *(परामर्शदाता)*
'ज्ञानछाया', डी-14, सुदामानगर, इन्दौर-452009
फोन : 0731-2797790, मोबा.: 9425053822
E-mail : anupamjain3@rediffmail.com

श्री चन्द्रशेखर जैन *(संयोजक)*
86, मगन विला, श्री विहार कॉलोनी, होटल क्लार्क
आमेर के पीछे, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर-302018
फोन : 0141-2553272, मोबा.: 9829134926
E-mail : csjain30@yahoo.co.in

श्री प्रकाश चन्द जैन *(सम्पादक)*
78, बैंक कॉलोनी, महेश नगर विस्तार ''बी''
गोपालपुरा बाईपास, जयपुर-302015
मोबा.: 9828374013
E-mail : pcjain49@gmail.com

श्री पारस जैन गहनौली *(सह-सम्पादक)*
बी-204बी, 10-बी स्कीम, गोपालपुरा बाईपास,
जयपुर-302018, मोबा.: 9928715869

श्री महेश चन्द जैन *(अर्थ संयोजक)*
36-सी, कृष्णा विहार विस्तार, गोपालपुरा बाईपास,
जयपुर-302015, मोबा.: 9828288830
E-mail : 3466mahesh@gmail.com

संयोजक की कलम से....

अच्छा समय आएगा

मार्च 2020 से जनवरी 2021 तक सभी सामाजिक बंधुओं ने कोरोना जैसी महामारी के प्रभाव में बहुत सी कठिनाइयों में अपने दिन व्यतीत किए हैं। लोगों ने इस समय में दुख को बहुत ही नजदीकी से देखा एवं महसूस किया है, बहुत लोगों ने अपने परिवारजनों को खोया भी है। लेकिन *'बुरा समय जाएगा - अच्छा समय आएगा'* उपरोक्त वाक्य का अनुसरण करते हुए मैं आप सभी समाज के बंधुओं को यह संदेश देना चाहता हूं कि व्यक्ति के जीवन काल में 'बुरा समय जाएगा' इसी विश्वास रूपी दीपक को अंत:करण में जलाए रखें। जब बुरा समय आता है तो ऐसे समय में उसके अपने ही उसका साथ छोड़ देते हैं, चारों ओर से कठिनाईयों व परेशानियों से घिर जाता है। ऐसे समय में उसका विवेक भी काम नहीं करता, सोचने-समझने की शक्ति क्षीण हो जाती है, मन में अनिश्चितता के विचार उत्पन्न होने लगते हैं और उन विचारों के अनुरूप ही वह अनिष्ठ कर बैठता है जिसका परिणाम उसको संपूर्ण जीवन काल में भोगना पड़ता है। कोरोना के समय भी कुछ ऐसा ही हुआ होगा, लेकिन फिर भी मनुष्य ने ऐसे समय में धैर्य से कार्य किया और कठिन समय को सहजता से अपनी दिनचर्या में ढाल कर उसके अनुरूप अपने क्रियाकलाप किए। उसने धार्मिक मान्यताओं को भी नए ढंग से स्वीकार किया, उसने आत्मचिंतन किया कि अगर मैं स्वयं ही नहीं रहूंगा तो यह आचार-विचार किस काम के और उसने इन परिस्थितियों से परिवार सहित लड़ने का साहस पैदा किया। बहुत से परिवारों ने अपने पारिवारिक कार्यक्रमों को लोगों की सीमित संख्या की उपस्थिति में आयोजित किया। परिवारों की लाइफ स्टाइल में जो परिवर्तन देखने को मिला वह भारतीय सभ्यता के अनुरूप नजर आई। परिवारों में मेल-मिलाप बढ़ने लगा, लोग एक दूसरे के दुख को समझने लगे। व्यक्तियों ने अपनी दिन-प्रतिदिन की आवश्यकताओं को सीमित किया, आर्थिक हालातों से समझौता कर धैर्य से कार्य कर परिस्थितियों के अनुरूप अपने को व्यवस्थित कर आगे बढ़ गये। आज उसी का सुखद परिणाम हमें आगे के समय में नजर आ रहा है। यह सब हमारे आत्मविश्वास एवं सकारात्मक विचारों के परिणामों से ही संभव हो पाया है। अत: हमें यही सोच रखनी चाहिए कि आने वाला समय अच्छा आएगा।

-चन्द्रशेखर जैन

पत्रिका में प्रकाशित लेख एवं विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। यह लेखकों के निजी विचार माने जाने चाहिये।

पत्रिका विज्ञापन सहयोग राशि

	वार्षिक	मासिक
कवर पृष्ठ अंतिम (मल्टीकलर)	31,000/-	
कवर पृष्ठ द्वितीय (मल्टीकलर)	25,000/-	
कवर पृष्ठ तृतीय (मल्टीकलर)	25,000/-	
कलर पृष्ठ (मल्टीकलर)	21,000/-	2,500/-
पुण्य स्मृति आधा पृष्ठ श्वेत श्याम	10,000/-	1,000/-
पुण्य स्मृति पूरा पृष्ठ श्वेत श्याम	15,000/-	1,500/-

पत्रिका सदस्यता

पत्रिका वार्षिक शुल्क	50/-	5/-
पत्रिका आजीवन सदस्य	500/-	
पत्रिका संरक्षक सदस्य	11,000/-	
पत्रिका हितैशी सदस्य	5100/-	

सूचना

(अ) रु. 500/- से कम के आर्थिक सहयोग राशि वालों के नाम पत्रिका में प्रकाशित नहीं किये जायेंगे।

(ब) जो सदस्य अपनी पत्रिका कोरियर द्वारा प्राप्त करना चाहते हैं वह रु. 50/- प्रति माह के हिसाब से एक वर्ष का शुल्क रु. 600/- श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका को भेजें।

- *पत्रिका हेतु प्रकाशनार्थ सामग्री पत्रिका संयोजक/सम्पादक के पास ही प्रेषित करें, जो प्रत्येक माह की 15 तारीख तक प्राप्त होनी चाहिये।*
- *पत्रिका हेतु सदस्यता शुल्क/विशेष सहायता संयोजक के पास प्रेषित करें।*
- *पत्रिका में स्थान उपलब्ध होने पर ही विज्ञापन का प्रकाशन किया जायेगा।*
- *गत वर्ष के रंगीन विज्ञापनदाताओं की बकाया विज्ञापन सहयोग राशि शीघ्र संयोजक के पास भिजवाने का कष्ट करें।*

आप पत्रिका की भुगतान राशि 'श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका' के नाम से या ऑनलाईन खाते में भी भेज सकते हैं, विवरण निम्न है :-

"SHRI PALLIWAL JAIN PATRIKA"
Bank Name : **BANK OF BARODA** • Branch : **DURGAPURA, JAIPUR**
A/c No.: **38260100005783** • IFSC Code : **BARB0DURJAI**

पत्रिका राशि ऑनलाईन जमा कराने के बाद संयोजक को सूचना देवें एवं ट्रांसफर राशि का स्क्रीन शॉट भी भेजें, इसके अभाव में जमा राशि का समायोजन किया जाना संभव नहीं होगा।

चन्द्रशेखर जैन, संयोजक पत्रिका
मो.: 9829134926

मान्यवर,

सभी साधर्मी बन्धुओं को सुचित किया जाता है कि अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा को विधवा सहायता एवं अन्य सहयोग प्रदान करने हेतु राशि चैक, नकद या ऑनलाईन महासभा के खाते में जमा करवाई जा सकती है, जिसका विवरण निम्न है :-

"AKHIL BHARTIYA PALLIWAL JAIN MAHASABHA"
Bank Name : **STATE BANK OF INDIA** • Branch : **C-SCHEME, JAIPUR**
A/c No.: **51003656062** • IFSC Code : **SBIN0031361**

राशि जमा कराने के पश्चात अर्थमंत्री को अवश्य सूचित करें, जिससे जमा की रसीद प्रेषित की जा सके।

अजीत कुमार जैन, अर्थमंत्री महासभा
मो.: 9413272178

पल्लीवाल जैन शिक्षा समिति का भवन

''एक सोच जो साकार हो रही है''

****

पल्लीवाल जैन समाज अब अपने चिर यौवन काल में प्रवेश कर चुका है। समाज के लोग काफी जागरूक होकर सामाजिक कार्यों में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेने लगे हैं। ऐसे में जयपुर समाज के कुछ निष्ठावान लोगों ने स्वयं के आर्थिक सहयोग एवं योगदान से एक दूरगामी सोच के साथ पल्लीवाल जैन शिक्षा समिति का गठन वर्ष 2013 में किया और प्रारंभिक काल में 11 लोगों के समूह द्वारा शुरू की गई यह संस्था आज 130 व्यक्तियों का विशाल समूह बन गयी है और समिति के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए तन–मन–धन से सक्रिय हो गयी है।

शिक्षा समिति ने अपने उद्देश्य की प्राप्ति हेतु जयपुर शहर में बाहर से आकर अपने अध्ययन काल में आवास की समस्या को दूर करने का लक्ष्य तय किया और श्री ओम प्रकाश जी जैन एडवोकेट के अतुलनीय सहयोग से 372 वर्ग गज का एक भूखण्ड जेडीए से अनुमोदित अपने नाम से खरीद कर समाज के बंधुओं के सामने एक आश्चर्यजनक कार्य कर दिया और साथ ही भवन का भूमि पूजन 13 अक्टूबर 2019 को का भवन निर्माण की प्रक्रिया को मूर्त रूप देने का कार्य प्रारंभ किया।

इस भवन का मानचित्र भवन निर्माण विद्या के विशेषज्ञों के माध्यम से बनाकर उन्हीं विशेषज्ञों के सानिध्य में निर्माण कार्य आरंभ कर 6 माह में इसे पूर्ण करने का लक्ष्य तय किया।

निर्माण कार्य प्रारंभ होने के साथ ही समाज के दानदाताओं ने भी अपने–अपने सहयोग की घोषणा कर संस्था के निर्माण कार्य को गति प्रदान की। मार्च माह में कोरोना जैसी महामारी ने निर्माण कार्य की गति को लगाम लगाई लेकिन फिर भी शिक्षा समिति के निष्ठावान पदाधिकारियों ने विपरीत परिस्थितियों में भी निर्माण कार्य को जारी रखा और भवन को ढांचागत स्थिति में ला खड़ा किया। भवन को देखने का मौका मुझे दिनांक 27 दिसंबर 2020 को मिला जब भवन का शुभ मुहूर्त पल्लीवाल रत्न प.पू. गणीवर्या मणिरत्नसागर जी मा.सा. की शुभ निश्रा में नवकार मंत्र के जप के साथ समाज के गणमान्य बंधुओं के सानिध्य में एक गरिमामय समारोह में

हुआ। प्रातः 11 बजे जैसे ही मा.सा. का प्रवेश 'पल्लीवाल शिक्षा संकुल', जगतपुरा में हुआ उनका गस्वंदन और मंगलाचरण के बाद समिति के वर्तमान अध्यक्ष श्री ताराचंद जी जैन, महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आर.सी. जैन (रिटा. आई.ए.एस) द्वारा दीप प्रज्वलित किया गया। प्रज्वलित दीप के प्रकाश ने भवन के वातावरण में एक नई ऊर्जा का संचार किया। उसके पश्चात वंदना के बाद सभी सामाजिक बंधुओं ने सामूहिक नवकार मंत्र का जाप किया।

समारोह में मा.सा. को काम्बली वोहराने के पश्चात संस्था के वर्तमान सचिव श्री अशोक कुमार जैन एवं पूर्व अध्यक्ष श्री आर.सी. जैन साहब ने संस्था की अब तक की गतिविधियों की जानकारी प्रदान की।

भवन जिसका नाम 'पल्लीवाल शिक्षा संकुल' रखा गया दूर से देखने में एक विशाल भवन दिखाई देता है। भवन पांच मंजिला है जिसमें एक बेसमेण्ट, भूतल के साथ तीन मंजिलें का निर्माण पूरा हो चुका है। कार्य योजना की जानकारी अनुसार भवन के भूतल पर रिसेप्शन, ऑफिस, प्रिंसिपल रूम, स्टाफ रूम एवं सभा कक्ष होंगे। नीचे बेसमेंट में 6 कमरे बनाए गए हैं जिसमें प्राइमरी स्कूल के संचालन का कार्य होगा। भवन की प्रथम एवं द्वितीय मंजिल पर कुल 16 कमरे (सभी में लेट–बाथ अटैच) हैं, जिसमें छात्रावास का संचालन किया जाना है। कार्य योजना अनुसार सभी कमरों में विद्यार्थियों के आवास हेतु आवश्यक संसाधन– आलमिरा, पलंग, बिस्तर, टेबल, चेयर आदि की व्यवस्था के साथ एक कमरे में 2 विद्यार्थियों के आवास की व्यवस्था रहेगी।

भवन की छत पर वार्डन का कमरा, किचन एवं डायनिंग हॉल के साथ–साथ खुला स्थान भी होगा।

समिति के उत्साही कार्यकर्ताओं एवं प्रबंध समिति के अनुसार यहां प्राइमरी स्कूल एवं छात्रावास का संचालन अप्रैल 2021 से आरंभ किये जाने हेतु प्रयासरत हैं। जानकारी में आया कि छात्रावास हेतु एक कमरे हेतु 5 से 3 लाख की सहयोग राशि के साथ 16 कमरों का निर्माण संपन्न हुआ है। ऐसे दानदाताओं की सभा में भूरी–भूरी अनुमोदना की गई।

प.पू. मा.सा. ने अपने आशीर्वचन में पल्लीवाल समाज हर क्षेत्र में उत्तरोत्तर प्रगति की ओर अग्रसर रहे जिसमें 'पल्लीवाल शिक्षा संकुल' एक मील का पत्थर साबित होगा, आपने कहा कि मैं जब तक हूं सदैव इस संस्था के विकास के लिए प्रयत्नशील रहूंगा तथा जहां भी विहार करूंगा वहां संस्था के कार्य की अनुमोदना करूंगा।

समारोह में जयपुर नगर निगम (ग्रेटर) से वार्ड सं. 142 से समाज के नवनिर्वाचित युवा पार्षद हिमांशु जैन का बहुमान भी किया गया।

अंत में मा.सा. के मुखारविंद से मांगलिक श्रवण के पश्चात उपस्थित महानुभावों ने शिक्षा संकुल के भवन का अवलोकन किया।

पल्लीवाल जैन शिक्षा समिति ने अब तक के अपने कार्यकाल में अपनी आशा से अधिक संसाधनों को प्राप्त किया है एवं निश्चित समय सीमा में अपने कार्यों को जीवंत कर समाज के सामने एक उदाहरण पेश किया है। आशा है आगे भी सभी बंधुओं के सार्थक सहयोग से संस्था और अधिक ऊंचाइयों प्राप्त करेगी।

सभी को साधुवाद।

–चन्द्रशेखर जैन

संयोजक, श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका

सूचना

विधवा सहायता एवं नि:शक्तजन/ असहाय महिला/ पुरूष को समाज में उचित सम्मान हेतु अ.भा.प. जैन महासभा की वर्तमान कार्यकारिणी की प्रथम बैठक में इस मद में दी जाने वाली सहायता राशि को रु. 500/– के स्थान पर रु. 1000/– प्रतिमाह दिये जाने का निर्णय लिया गया। जिसके अन्तर्गत माह दिसम्बर 2020 तक 132 आवेदकों को समाज के सहयोग/ पुण्यार्जन से सहायता राशि का भुगतान सीधे उनके बैंक खातों में किया गया तथा माह जनवरी 2021 से 135 विधवा महिलाओं एवं नि:शक्तजन/ असहाय महिला/ पुरूष को सहायता राशि दिया जाना निश्चित किया गया है।

आप सभी से अनुरोध है कि आप भी परिवार में किसी भी उपलक्ष पर इस मद में सहायता राशि सीधे महासभा के बैंक खाते में या अर्थमंत्री को भुगतान कर पुण्यार्जन का लाभ प्राप्त करें। महासभा आपके इस आत्मीय सहयोग के लिए सदैव आभारी रहेगी।

पत्रिका सहायता

★ **श्री शिखर चन्द जी जैन** पुत्र स्व. श्री आनन्द चन्द जैन, ई–11, राम नगर विस्तार, हवा सड़क, सोडाला, जयपुर ने अपने सुपुत्र चि. दीपक जैन संग सौ.कां. मेघा जैन सुपुत्री श्री प्रकाश चन्द जैन, गैलेक्सी अपार्टमेंट न्यू फ्रेन्ड्स कॉलोनी, अलवर के दिनांक 9.12.2020 को सम्पन्न शुभ विवाहोपलक्ष पर रु. 1100/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. डी–2420)*

★ **श्री विकास जी जैन, विशाल जी जैन,** नोगावां अलवर ने अपनी पूज्यनीय माताजी स्व. श्रीमती रत्नमाला जी जैन धर्मपत्नी स्व. श्री ज्ञानचन्द जी जैन (पूर्व सरपंच नोगावां) की पुण्य स्मृति में रु. 500/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. डी–2417)*

★ **श्री पवन जी जैन** (चौधरी) 1/544, काला कुंआ हा. बोर्ड, अलवर ने अपनी सुपुत्री सौ.कां. शिखा जैन (सी.ए.) संग चि. सौरभ जैन सुपुत्र श्री प्रदीप जैन (खिलौने वाले), पालम (दिल्ली) के दिनांक 25.11.2020 को सम्पन्न शुभ विवाहोपलक्ष पर रु. 5100/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. डी–2502)*

जैनियों की सम्पन्नता का राज

हिन्दुस्तान में जैनों की आबादी 1 प्रतिशत से भी कम है फिर भी आर्थिक दृष्टि से यह बहुत सम्पन्न वर्ग है। देश की अर्थव्यवस्था का एक बड़ा हिस्सा जैनियों के कब्जे में है। क्या कारण है कि जैन समाज भारत का बहुत छोटा हिस्सा होते हुए भी आर्थिक दृष्टि से भारत में बहुत प्रभावी है।

क्या इसके कोई ऐतिहासिक कारण है या इसका जैन धर्म के सिद्धान्तों से कोई संबंध है या यह संयोग मात्र है। वास्तव में देखा जाए तो सच्चाई कहीं मध्य में छिपी हुई है। भगवान महावीर की प्रेरणा और जैन आदर्श बहुत हद तक जैनियों को धनवान बनाए रखने में महत्वपूर्ण है।

ऐतिहासिक कारण :

जैन धर्म में 24 तीर्थंकर माने गए हैं लेकिन जैन धर्म का सबसे अधिक प्रचार–प्रसार भगवान महावीर के समय और उनके बाद हुआ है।

ब्राह्मण धर्म में चार वर्णों की स्थापना की– ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। ब्राह्मण सम्मान की दृष्टि से सर्वोच्च थे और क्षत्रिय बल की दृष्टि से। ब्राह्मणों ने ज्ञान पर अधिकार कर लिया और क्षत्रियों ने शक्ति पर। वैश्य और शूद्र निचले पायदान पर रखे गए। वैश्यों को वाणिज्य–व्यवसाय, कृषि–पशुपालन और शूद्रों को सेवा वृत्ति के लिए नियुक्त किया गया।

भगवान महावीर की वाणी वेद–विधान विरोधी थी अतः यह ब्राह्मण वर्ग को अप्रिय थी इसलिए ब्राह्मणों का भगवान महावीर का अनुयायी बनना संभव नहीं था। वेद–विधान, यज्ञ, बलि ब्राह्मणों की आजीविका थी। अतः किसी वर्ग से यह आशा करना कि वह अपनी आजीविका के साधन को छोड़कर जाएगा उचित नहीं था। अतः ब्राह्मण वर्ग द्वारा भगवान महावीर की वाणी का विरोध किया ही जाना था।

क्षत्रिय वर्ग शासक वर्ग था। उस समय आज की तरह राष्ट्रीय राज्य नहीं थे। उस समय सीमाओं का विस्तार और शत्रुओं का नाश राजा का पहला कर्तव्य था। यह ऐसा कर्तव्य था जिसमें हिंसा का प्रयोग निश्चित था। इस वर्ग को भी महावीर–वाणी बहुत रुचिकर नहीं थी। सैन्यवर्ग के लोगों को विशेष प्रयोजनार्थ मांसाहार और मदिरापान को स्वीकृति दी गई थी जिसका महावीर ने पूर्ण निषेध किया था। अतः इस वर्ग ने भी महावीर का अनुयायी होने में संकोच महसूस किया।

तृतीय वर्ग वैश्यों का था। इनकी आजीविका कृषि–पशुपालन और वाणिज्य थी। कृषि और पशुपालन साथ–साथ चलने वाले व्यवसाय थे। भगवान महावीर ने अहिंसा का उपदेश दिया। कुछ विचारकों ने इसे इतनी ऊँचाईयों तक पहुँचा दिया कि कृषि के दौरान होने वाली हिंसा से भी बचने की सलाह दी गई। वाणिज्य प्रत्यक्ष रुप से पूर्ण अहिंसक आजीविका स्त्रोत था। भगवान महावीर के मुख्य अनुयायी इसी वर्ग से निकले। प्रारम्भ में कृषकों का भी इसमें स्थान रहा पर बाद में धीरे–धीरे घोर अहिंसा पर जोर देने से कृषकों का जैन धर्म में प्रवेश कम हो गया इस प्रकार व्यापार ही ऐसा आजीविका का स्त्रोत रहा जिसमें जैन धर्म के सिद्धान्तों का प्रत्यक्ष रुप कोई उल्लंघन नहीं होता दिखाई दे रहा था। इसलिए व्यवसायी वर्ग में जैन धर्म ज्यादा फैला।

2. भारत में ऐतिहासिक काल से तीन धर्म मुख्य हैं– ब्राह्मण/हिन्दू धर्म, बौद्ध धर्म तथा जैन धर्म। ब्राह्मण धर्म की चतुर्वर्णीय अवस्था में ब्राह्मण और क्षत्रियों का स्थान सर्वोच्च रहा। ब्राह्मण शास्त्रों में लिखा है सरस्वती और लक्ष्मी का वैर है। इसलिए ब्राह्मण जिन्होंने सरस्वती को अपनी देवी मान लिया तो लक्ष्मी इनसे स्वतः ही दूर हो गई। ब्राह्मणों के जीवन का हाल देखें तो पता चलता है कि ब्राह्मण बहुत ही सादगी पूर्ण जीवन यापन करते थे। उनकी जीवनचर्या भिक्षाटन से चलती थी। एक वर्ग के रुप में ब्राह्मण ज्ञानी वर्ग था परन्तु धन की सदैव इस वर्ग ने उपेक्षा की। धन संग्रह पर कभी भी इस वर्ग ने बल नहीं दिया।

क्षत्रिय शासक वर्ग था। क्षत्रियों का कर्तव्य सीमा विस्तार बताया गया और इसकी कोई सीमा नहीं थी। इसलिए ज्यादातर राजाओं का जीवन काल युद्धों में ही बीत जाता था। युद्ध सदैव खर्चीला सौदा रहा है। हथियार, युद्ध के साजो–सामान को खरीदने में राजकोष खाली हो जाता था अगर कुछ शेष रहता तो वो राजाओं के ऐशोआराम पर खर्च हो जाता था। इस वर्ग ने भी कभी धनसंग्रह को ज्यादा महत्व नहीं दिया। शूद्रों को सेवावृत्ति का विधान था जिससे उनका भरण पोषण तो होता था परन्तु धनसंग्रह की संभावना नहीं थी।

वैश्य वर्ग ही ऐसा वर्ग था जो धनसंग्रह में समर्थ था परन्तु ब्राह्मणीय व्यवस्था में इनका स्थान नीचा था अतः ये लोग धीर–धीरे गैर ब्राह्मणीय धर्मों की ओर खींचे चले गए।

जैन धर्म भगवान महावीर से भी पहले से था परन्तु बौद्ध धर्म का उदय महात्मा बुद्ध के साथ हुआ और उनके जीवन काल एवं उनके बाद यह पूरे भारत पर छा गया। बौद्ध धर्म के सिद्धान्त क्षत्रिय और वैश्य दोनों वर्गों के लिए रुचिकर थे।

TRAFO
Power & Electricals Pvt. Ltd.

TRAFO POWER & ELECTRICALS PVT. LTD.

AN ISO 9001:2008 COMPANY

PRODUCTS

-POWER & DISTRIBUTION TRANSFORMERS

-PRESSED STEEL RADIATORS

-SPECIAL PURPOSE TRANSFORMERS

-PACKAGE SUBSTATION

CONTACT

Trafo Power & Electricals Pvt. Ltd.
C-20 Site-C U.P.S.I.D.C., Industrial Area, Sikandra,
Agra, Uttar Pradesh - 282007, India

Phone No : +91-562-3290391
Fax : +91-562-2640388
E-mail : info@trafo.co.in

बौद्ध धर्म में जैन धर्म की तरह अहिंसा की कट्टरता नहीं थी जिससे क्षत्रिय ओर कृषिपालक वैश्य भी इस धर्म को आसानी से अपना सकते थे। इस प्रकार वैश्यों को वह वर्ग जो कृषक था उसको ब्राह्मणीय व्यवस्था के अतिरिक्त एक अन्य विकल्प मिल गया जो जैन धर्म की अहिंसा की कट्टरता से तो मुक्त था साथ ही उसे समाज में उचित स्थान भी दिलाता था। भगवान बुद्ध ने जातिप्रथा का कट्टर विरोध किया तो शूद्र वर्ग को भी बौद्ध धर्म में आशा दिखाई दी और यह वर्ग भी उस ओर आकर्षित हुआ।

इस प्रकार ज्ञानी ब्राह्मणों, युद्धप्रिय क्षत्रियों, कृषक वैश्यों और सेवक शूद्रों के लिए जैन धर्म से बेहतर विकल्प ब्राह्मण और बौद्ध धर्म के रुप में मिल गए। अतएव अब जैन धर्म में ऐसे वर्ग का बाहुल्य हो गया जिसकी आजीविका का साधन वाणिज्य था, इस प्रकार जैन धर्म मुख्यतः वणिक वर्ग का धर्म रह गया यद्यपि कुछ क्षत्रिय राजाओं का भी जैन होना पाया गया है परन्तु इसकी संख्या कम है। ऐसे राजा तो बहुत हुए हैं जिन्होंने जैन धर्म का समर्थन किया है और जैन धर्मावलम्बियों की रक्षा की परन्तु ऐसे राजा बहुत कम मिलते हैं जो स्वयं जैन धर्म का पालन करते हों।

जैन रिवाज/ परम्पराएँ/ सिद्धान्त :

रात्रि भोजन त्याग/ दिवा भोजन :

''रात्रि भोजन त्याग'' देखने में बहुत सामान्य प्रतीत होता है लेकिन इसका बहुत बड़ा महत्त्व है और आर्थिक उन्नतिका बहुत बड़ा साधन है।

रात्रि भोजन त्यागने वाले व्यक्ति को घर पर रात्रि होने से पहले ही आना होगा और एक बार जब शाम का भोजन हो जाता है तो शारीरिक और मनोवैज्ञानिक रुप से आराम करने की इच्छा होती है। व्यक्ति की घर से बाहर निकलने की इच्छा भी कम होती है। जब व्यक्ति जल्दी खाना खाता है तो जल्दी सोता है और जल्दी सोता है तो जल्दी जगेगा। दैनिक क्रियाएँ जल्दी प्रारम्भ होंगी। इस प्रकार एक सकारात्मक चक्र बनेगा।

जैन धर्म में खान–पान की शुद्धता पर परम बल दिया गया है। अतः बाहर के खाने को बहुत हद तक हेय दृष्टि से देखा गया है। आलू, प्याज, लहसून आदि बहुत से जमीकंद और हरी सब्जियों में भी बहुत त्याग का विधान बताया गया है। जो लोग जैन धर्म मानते हैं वो घर से बाहर इन चीजों का पालन नहीं कर पाते। अतः जैन धर्मावलम्बी का बाहर खाना अत्यन्त मुश्किल हो जाता है। बाहर का खाना घर के खाने से कई गुना महँगा होता है। इस प्रकार बाहर खाना खाने से होने वाला आर्थिक व्यय बच जाता है, तो जो व्यक्ति बाहर खाते है उनसे जैन वर्ग निश्चित ही आगे हो जाता है।

मांसाहार और मदिरापान का निषेध :

जैन धर्म मांसाहार और मदिरापान का घोर निषेध करता है। इन चीजों के स्वास्थ्य के दुष्परिणाम के साथ–साथ आर्थिक नुकसान भी काफी है। मांसाहार और मदिरापान निश्चित रुप से बहुत महंगे शौक हैं। मांसाहारी भोजन शाकाहारी भोजन से कई गुना महंगा पड़ता है। इस प्रकार व्यर्थ का व्यय होता है।

मदिरापान मानव के आर्थिक जीवन को कई ढंग से प्रभावित करता। है। मदिरापान निश्चित रुप से बहुत खर्चीला होता है। अतः प्रत्यक्ष रुप से तो आर्थिक नुकसान होता है। इसके अलावा मदिरापान व्यक्ति को शारीरिक रुप से भी नुकसान पहुंचाता है। शराब के सेवन के बाद व्यक्ति की कार्यक्षमता बंद हो जाती है। जब व्यक्ति शराब पी लेता है तो न केवल उस दौरान जब वह शराब के नशे में रहता है वरन् बाद में भी व्यक्ति की क्षमता नकारात्मक रुप से प्रभावित होती है और उसकी उत्पादकता पर गहरा असर पड़ता है।

शराब ऐसी चीज है जिसकी लत लग जाती है तो व्यक्ति का एक नियमित खर्चा हो जाता है और उसकी बचत की क्षमता खत्म हो जाती है। व्यापार के विकास के लिए निरंतर पूंजी की आवश्यकता होती है। परन्तु जब व्यक्ति बचत नहीं कर पाता है तो निश्चित रुप से पूंजी पैदा नहीं होती और व्यापार का ज्यादा विस्तार नहीं होगा, शराब की लत में पहले की जमा पूंजी भी खर्च हो जाएगी।

इस प्रकार मदिरापान और मांसाहार दोनों ही आर्थिक रुपसे खर्चीले पड़ते हैं और व्यक्ति की बचत क्षमता को कम करते हैं और ऐसे समय में जब पूंजी के लिए बाहरी स्रोत बहुत कम थे तब निजी बचत ही व्यापार विस्तार और समृद्धि का मुख्य मार्ग थी तब वो वर्ग निश्चित रुप से बेहतर स्थिति में होगा जिसमें मांसाहार और मदिरापान का निषेध हो बजाय अन्य वर्गों के जहाँ मांसाहार और मदिरापान का प्रचलन मिलता हो।

ब्राह्मण धर्म में भी ब्राह्मण जाति के बहुत लोग मांसाहार और मदिरापान निषेध पर बल देते हैं परन्तु यह वर्ग आर्थिक रुप से इसलिए आगे नहीं बढ़ सका क्योंकि ब्राह्मण व्यापार–वाणिज्य नहीं करते थे और सदैव ही विद्या की देवी सरस्वती के भक्त रहे।

जैन धर्म की पूजा उपासना पद्धति :

यद्यपि मन्दिरों का प्रचलन सर्वप्रथम बौद्धों ने किया परन्तु बाद में जैन धर्म में भी एक वर्ग ने मन्दिर पूजा को अपना लिया। जैन धर्म में दो वर्ग बन गए एक मन्दिरमार्गी और दूसरे स्थानकवासी। मन्दिरमार्गी सम्प्रदाय में मन्दिर जैन समाज के बड़े सांस्कृतिक केंद्र बन गए और मन्दिर वो प्लेटफार्म बन गए जहाँ जैन समाज के लोग आपस में घुलमिल सकें। चूंकि जैन समाज एक वणिक वर्ग था तो आपसी संबंधो ने आर्थिक सुदृढता प्रदान की आपसी लेन–देन बढ़ा। इससे

जैन समाज के लोगों की गतिशीलता बढी और यह आर्थिक उन्नति में परिणित हुई। आपसी व्यवहार में भी कम ब्याज दरें, माल का साझा लेन–देन आदि का विकास हुआ। उस युग में जब आधुनिक प्रकार की वाणिज्यिक संस्थाए नहीं थी तब इस प्रकार समाज का संगठित होकर हितरक्षा करना बहुत ही अच्छा रहा।

मन्दिर वैयक्तिक रुप से भी व्यक्ति को आर्थिक रुप से सम्पन्न बनाने में सहायक हुए। मन्दिर में सुबह जल्दी जाया जाता है और स्नान वगैरहा करके जाया जाता है। जब व्यक्ति को मन्दिर जाना है तो वह जल्दी जगेगा, स्नान वगैरहा करेगा और मन्दिर से अपने कार्यस्थल पर जाएगा। उस युग में जब कृत्रिम प्रकाश की व्यवस्था नहीं थी तो जल्दी दुकान खोलना ही एक ऐसा साधन था जिससे कार्यकारी समय की अवधि बढ़ सकती थी। इस प्रकार अधिक कार्य दिवस से आर्थिक क्रियाओं की संख्या ज्यादा होगी। इस प्रकार आर्थिक विस्तार की सम्भावनाएँ ज्यादा हो जाती हैं।

स्थानकवासियों में जैन धर्मावलम्बी प्रातः जागकर शास्त्राध्ययन करते हैं इसके लिए भी सुबह जल्दी जागकर स्नान करना होता है और यह कार्य भी कार्य दिवस की अवधि बढ़ा देता है।

इस प्रकार ऐतिहासिक कारणों से जैन धर्म के अनुयायी सम्पन्न होते गए और जैन धर्म के व्यावहारिक पक्ष ने उन्हें और आगे बढने में मदद की।

–डॉ धीरज जैन

'वर्तमान में वर्धमान' से साभार

पत्रिका सदस्यता

3093. Sh. Sudhir Ji Jain, 9/44, Baba Kapoor Gali, Galla Mandi, Tajganj, Agra-282001, Mob.: 9359959154 *(CR D-2419)*

3094. Sh. Vimal Kumar Ji Jain, Vimal Kirana Store, Tempo Stand Ke Piche, AB Road, Banmore, Murena-476444 (M.P.) *(CR D-2422)*

3095. Smt. Kavita Ji Jain W/o Sh. Ankur Jain, 279-A & 281, Ground Floor, KH No. 124/16, Block B, Jai Vihar Phase, Najafgarh, Near Bani Camp, New Delhi-110043, Mob.: 8744014235 *(CR D-2424)*

3096. Sh. Harshit Ji Jain S/o Sh. Sanjay Kumar Jain, A-70, Vaishali Nagar, Alwar-301001, Mob.: 9828194184 *(CR D-2501)*

3097. Sh. Amit Ji Jain S/o Sh. Vijay Jain, Village Nagar, Post Bichpuri, Dist. Agra-283105 *(CR D-2447)*

विधवा सहायता

★ **श्री शिखर चन्द जी जैन** पुत्र स्व. श्री आनन्द चन्द जैन, ई–11, राम नगर विस्तार, हवा सड़क, सोडाला, जयपुर ने अपने सुपुत्र चि. दीपक जैन संग सौ.कां. मेघा जैन सुपुत्री श्री प्रकाश चन्द जैन, गैलेक्सी अपार्टमेंट न्यू फ्रेन्ड्स कॉलोनी, अलवर के दिनांक 9.12.2020 को सम्पन्न शुभ विवाहोपलक्ष पर रु. 3,000/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4794)*

★ **श्री बाबूलाल जी जैन** (नोगावां वाले) पालम, नई दिल्ली–45 ने अपनी पूजनीय माताजी स्व. श्रीमती सोमोती जी जैन की पुण्य स्मृति पर रु. 6,000/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4867)*

★ **श्री सतीश चन्द जी जैन,** निवासी डब्ल्यू जेड–1198, पालम गांव, नई दिल्ली–45 ने अपनी सुपुत्री सीमा जैन, सीए के दि. 1.12.2020 को सम्पन्न शुभ विवाह उपलक्ष पर रु. 12,000/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4865)*

★ **श्री अशोक कुमार जी जैन,** अजमेर (कार्यकारिणी सदस्य, अ.भा.प.जैन महासभा) ने दो विधवा सहायता हेतु रु. 24,000/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4866)*

★ **श्री नितिन कुमार जी जैन** पुत्र श्री अनिल कुमार जैन, 23–ए, विनायक विहार, मुहाना मण्डी, जयपुर ने विधवा सहायता हेतु रु. 11/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4846)*

★ **श्री नितिन कुमार जी जैन** पुत्र श्री अनिल कुमार जैन, 23–ए, विनायक विहार, मुहाना मण्डी, जयपुर ने विधवा सहायता हेतु रु. 2,100/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4847)*

★ **श्री रमेश चन्द जी जैन, पंकज जैन,** 12, रेलवे रोड, पालम कॉलोनी, नई दिल्ली–110045 ने विधवा सहायता हेतु रु. 6,000/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4848)*

★ **श्री रमेश चन्द जी जैन, पंकज जैन,** 12, रेलवे रोड, पालम कॉलोनी, नई दिल्ली–110045 ने विधवा सहायता हेतु रु. 5,000/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4849)*

★ **श्री अनिल कुमार जी जैन एवं श्रीमती हेमलता जी जैन,** डी–197, मोती पार्क के सामने, बापू नगर, जयपुर ने दो विधवा सहायता हेतु रु. 24,000/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4850)*

समस्त पल्लीवाल जैन समाज को नववर्ष की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

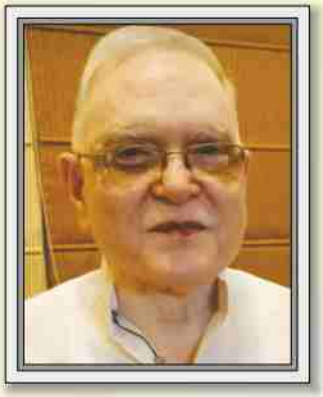

अध्यक्ष महासभा
श्री आर.सी. जैन, *Retd. IAS*
(जयपुर)

महामंत्री महासभा
श्री राजीव रतन जैन
(इन्दौर)

अर्थमंत्री महासभा
श्री अजीत जैन
(अलवर)

परामर्शदाता पत्रिका
डॉ. अनुपम जैन
(इन्दौर)

संयोजक पत्रिका
श्री चन्द्रशेखर जैन
(जयपुर)

संपादक पत्रिका
श्री प्रकाश चन्द जैन
(जयपुर)

सहसंपादक पत्रिका
श्री पारस जैन गहनोली
(जयपुर)

अर्थसंयोजक पत्रिका
श्री महेश चन्द जैन
(जयपुर)

भावभीनी श्रद्धांजलि

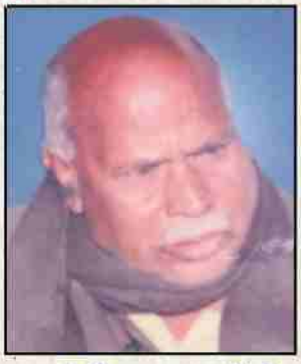

स्व. श्री शिव लाल जी जैन
(गंगापुरसिटी वाले)
(27.02.1922 - 13.02.2008)

स्व. श्रीमती कपूरी देवी जी जैन
(01.03.1930 - 15.01.2018)

आपका स्नेह, सद्व्यवहार, सेवा भावना एवं प्रेरणादायक चरित्र हमारी स्मृति में सदा रहेगा एवं मार्गदर्शन करता रहेगा। हम सभी परिवारजन आपको शत-शत नमन करते हुए अश्रुपूरित नेत्रों से श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

श्रद्धावनत

पुत्र-पुत्रवधु :
श्रीमती माया जैन
महावीर-कुसुम जैन
श्रीमती राजुल जैन
देवेन्द्र-विनीता जैन

पौत्र-पौत्रवधु :
हेमन्त-किरण जैन
हिमान्शु-शिप्रा जैन
सौरभ-आस्था जैन
वैभव-सौम्या जैन
शशांक-एश्वर्या जैन

प्रपौत्र, प्रपौत्री :
स्वास्तिक, आराध्य,
रिधान, आरोही

पुत्री-दामाद :
कमला-सुरेश जैन
आशा-अजित जैन
गुड्डी-अशोक जैन
चन्द्रेश-अशोक जैन

पौत्री-दामाद :
प्रियंका-अरविन्द जैन
ऋतु-अंकित जैन
स्वाति-कुलदीप जैन
श्वेता-नीरज जैन
नीतू-डालचन्द जैन
सुनयना-रवी कुमार जैन
सोनम-तरूण जैन

दोहता-वधु :
राजेश-मोहनी जैन
मनीष-लता जैन
विकास-निधि जैन
अनुराग-अंकिता जैन

दोहते :
विवेक, राहुल, अभिनव,
आयुश जैन

दोहती-दामाद :
वर्षा-प्रवीण जैन
अन्नू-नीरज जैन
रक्षा-विनीत जैन
शिवानी-आयुश जैन
ऋषि-विकास जैन
पूर्ती-मोहित जैन
कृपा-विशाल जैन

निवास : 64, सूर्य नगर, तारों की कूंट, टोंक रोड, जयपुर-302021
मोबाइल : 94140-57269

हार्दिक बधाई

चि. दीपक जैन

(सुपुत्र श्रीमती राजरानी जैन एवं श्री शिखर चन्द जैन, जयपुर)
(सुपौत्र स्व. श्रीमती कैलाश देवी एवं स्व. श्री आनन्द चन्द जैन)

संग

सौ.कां. मेघा जैन

(सुपुत्री श्रीमती राजेश जैन एवं श्री प्रकाश चन्द जैन, अलवर)

के शुभ विवाह (दि. 9.12.2020) पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाऐं

शुभेच्छु

चाचाजी-चाचीजी :
मुकेश चन्द-मधु जैन
दिनेश चन्द-कविता जैन
भूपेन्द्र चन्द जैन

बुआजी-फुफाजी :
स्व. श्रीमती तिलोत्मा-महेश चन्द जैन
अर्चना जैन-शीतल प्रसाद जैन
स्व. श्रीमती वन्दना-विमल कुमार जैन

भाई, बहिन :
हिमांशु जैन,
दीपिका जैन, आरती जैन

नानाजी-नानीजी :
स्व. श्री बाबूलाल जी-गुणमाला जैन

मामाजी-मामीजी :
विमल कुमार-सरिता जैन
स्व. श्री देवेन्द्र जैन-रीता जैन
चंचल कुमार-अनुराधा जैन

मौसाजी-मौसीजी :
उमेश चन्द-मधु जैन
अखिलेश-कल्पना जैन

शिखर चन्द जैन
रिटा. स्टेशन अधीक्षक, रेलवे स्टेशन जयपुर जंक्शन
निवास : *ई-11, राम नगर विस्तार, हवा सड़क, जयपुर-302019, मो.: 9414539630*

भावभीनी श्रद्धांजलि

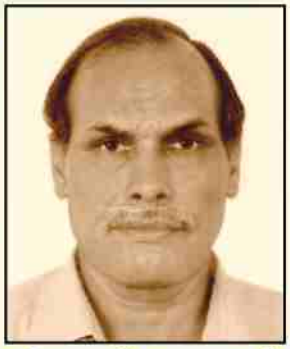

स्व. श्री महावीर प्रसाद जी जैन
(सुपुत्र स्व. श्री हरीशचन्द्र जी जैन)
(पुण्यतिथि : 21.5.2017)

स्व. ई. श्री मोहित कुमार जी जैन
(सुपुत्र स्व. श्री महावीर प्रसाद जी जैन)
(पुण्यतिथि : 9.8.2018)

हम आपको सादर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए
भगवान वीर से आपकी चिर आत्मीय शांति की प्रार्थना करते हैं।

श्रद्धावनत

श्रीमती मिथलेश जैन
(धर्मपत्नी)
डॉ. मेघा जैन-डॉ. पीयूष जैन
(पुत्री-दामाद)

श्रीमती मिथलेश जैन
(माँ)
डॉ. मेघा जैन-डॉ. पीयूष जैन
(बहन-बहनोई)

मोहित कुमार जैन ट्रस्ट (पंजि.)

ए/165, पालम एक्सटेंशन, सेक्टर 7, द्वारका, नई दिल्ली-110077
दूरभाष : 9599660709, 9599230509

आहार पर अनुशासन

एक भाई ने पूछा– 'मैं जैसा हूं वैसा ही रहूंगा या बदल भी सकता हां ?' मैंने कहा– 'हमारी दुनिया का नियम है – परिवर्तन हर आदमी बदल सकता है। जो बदलना चाहे वह बदल सकता है। जो बदलना नहीं चाहे, वह बदल नहीं सकता।'

'परिवर्तन शाश्वत नियम है। प्रत्येक पदार्थ में क्षण–क्षण परिवर्तन होता है। पर आदमी जिस दिशा में परिवर्तन लाना चाहे उस दिशा में परिवर्तन ला सकता है। तुम भी बदल सकते हो।'

उसने पूछा– 'कैसे बदल सकता हूं। कुछ उपाय बताएं। क्या आदतें बदली जा सकती हैं ?' मैंने कहा– 'बहुत अच्छी तरह से बदली जा सकती हैं। यदि आदतें न बदलें तो पुरुषार्थ का कोई अर्थ ही नहीं होता, अस्तित्व का कोई अर्थ ही नहीं होता। सब अर्थशून्य हो जाता है, यदि आदमी न बदले या न बदल सके। पुरुषार्थ की गाथा इसलिए गाई जाती है कि असंभव लगने वाली बात भी उसके द्वारा संभव बन जाती है। आदत को बदलने लिए आहार–शुद्धि करनी होती है।'

उसने पूछा– बड़ा आश्चर्य होता है, आदतों को बदलने में आहार शुद्धि से क्या संबंध है ? खाता हूं अपनी रुचि के लिए, खाता हूं स्वाद के लिए, खाता हूं जिह्वा की तृप्ति के लिए। फिर आदतों का इससे क्या संबंध ? आदतें कहीं, खाने का प्रश्न कहीं यह बिलकुल बेमेल–सा लगता है।

मैंने कहा– 'बेमेल है, यह हमारी स्थूलबुद्धि का निर्णय है वास्तव में यही यथार्थ है। जिस व्यक्ति ने आहार–शुद्धि नहीं की, वह कभी अपनी आदत को नहीं बदल सकता। गहरा संबंध है आहार का और आदतों का। आदतें बनती हैं चैतन्य–केन्द्रों के स्रोतों के द्वारा। हमारे मस्तिष्क में अनेक विंदु हैं, केन्द्र हैं। वे हमारी प्रवृत्तियों का संचालन करते हैं। आदमी नींद लेता है। नींद का नियामक केन्द्र है मस्तिष्क में। आदमी हंसता है, रोता है, सोचता है, चिंतन करता है। इन सबके अलग–अलग केन्द्र हैं। स्मृति का केन्द्र है, कल्पना का केन्द्र है, बुद्धि का केन्द्र है। जितनी मानसिक प्रवृत्तियां हैं, उन सबके केन्द्र हैं मस्तिष्क में। जो केन्द्र सक्रिय हो जाता है, जाग जाता है। आदमी वैसा ही बन जाता है। सारे जीवन का संचालन इन मस्तिष्कीय केन्द्रों द्वारा होता है। सारे केन्द्र विद्युतीय आवेशों के द्वारा और रसायनों के द्वारा जागते हैं। मस्तिष्क के अपने रसायन हैं। जैसे शरीर को भोजन की अपेक्षा होती है वैसे ही मस्तिष्क को भी भोजन की अपेक्षा होती है। शरीर को टॉनिक चाहिए तो मस्तिक को भी टॉनिक चाहिए। आज के वैज्ञानिक मस्तिष्क के टॉनिकों की खोज में लगे हुए हैं प्राचीन काल में अतीन्द्रिय–ज्ञानियों ने भी इस विषय में अनेक खोजें की थीं। आयुर्वेद के ग्रंथ इन खोजों से भरे पड़े हैं। इन ग्रन्थों में मस्तिष्कीय टॉनिक और नाड़ी संस्थान को बल–अबल देने वाले पदार्थों के विषय में बहुत लम्बी चर्चा उपलब्ध होती है।

मस्तिष्क का संबंध है विद्युत् के आवेशों से और रसायन से। रसायन बनते हैं आहार से। इस प्रकार आहार का सम्बन्ध जुड़ गया। जैसा आहार वैसा रसायन, जैसी रसायन वैसा मस्तिष्कीय क्रिया और जैसी मस्तिष्कीय क्रिया वैसा हमारा आचार–व्यवहार, विचार और आदतें। यह एक पूरा चक्र है।

आहार को समझे बिना आदतों को नहीं बदल सकते। आहार–शुद्धि किए बिना स्वभाव का परिवर्तन नहीं हो सकता। आदमी दूसरे–दूसरे कितने ही परिवर्तन करे, स्वभाव नहीं बदलेगा जब तक कि वह अपने आहार के क्रम को नहीं बदल देता। दोनों का गहरा सम्बन्ध है। सबसे पहले हमारा ध्यान आहार पर केन्द्रित होना चाहिए। आहार का अर्थ बहुत व्यापक है। केवल मुंह से खाना ही आहार नहीं है। हम जो कुछ बाहर से ग्रहण करते है वह सारा आहार है। नथुनों से जो श्वास लेते हैं, वह भी आहार है। बोलने के लिए बाह्य वातावरण से भाषा के योग्य परमाणु लेते हैं, वह भी आहार है। चिन्तन के लिए मानसिक परमाणुओं को संगृहीत करते हैं, वह भी आहार है। प्राण का आकर्षण, भाषा का आकर्षण, चिन्तन के परमाणुओं का आकर्षण आदि–आदि सभी आहार हैं। इस व्यापक अर्थ में हम आहार को समझे। इसको समझ लेने पर सारी समस्याएं सुलझ जाएंगी।

आहार मस्तिष्क को अत्यधिक प्रभावित करता है। आदमी ने शराब पी। मस्तिष्क का नियंत्रण ढीला हो गया। वह पागल बन गया। पागल किसने बनाया ? भोजन ने उसे पागल बना दिया। शराब भी एक प्रकार का भोजन है, आहार है। भांग पी। आकाश– पाताल एक हो गए। सारा संसार घूमने लगा। यह भी आहार के कारण ही हुआ। भांग भी एक प्रकार का आहार है। मादक द्रव्यों के परिणामों से हम परिचित हैं। किसी व्यक्ति की स्मृति बढ़ जाती है। वह ब्राह्मी का प्रयोग करता है, शंखपुष्पी का प्रयोग करता है, स्मृति बढ़ जाती है। आज के वैज्ञानिक स्मृति को बढ़ाने वाले अनेक प्रकार के रसायनों की खोज कर रहे हैं और वे साथ ही साथ स्मृति घटाने वाले रसायनों की खोज भी कर रहे हैं। उनका मानना है कि बुद्धि और स्मृति सबके लिए जरूरी नहीं होती। जो चोर हैं, लुटेरे हैं, हत्यारे हैं, खूंखार हैं, उनकी स्मृति को कम कर दिया जाए जिससे अपराध कम हो सके। इस स्थिति को घटित करने के लिए वे स्मृति घटाने वाले रसायनों की खोज कर रहे हैं। इसी प्रकार स्मृति को वृद्धिंगत करने वाले रसायनों की खोज भी चल रही है। आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति के अनुसार

स्मृति बढ़ाने वाले द्रव्य ये हैं–गोरखमुंडी, सतावरी, ब्राह्मी, शंखपुष्पी आदि–आदि। आज के वैज्ञानिक इस खोज में पूरी तन्मयता से लगे हुए हैं कि कौन–सा रसायन क्या कार्य करता है? उसके आधार पर वे विभिन्न रसायनों का निर्माण कर रहे हैं। आयुर्वेद के आचार्यों ने पदार्थों की खोज की और उन पदार्थों के द्वारा रसायनों को पैदा करने का उपाय बताया। प्रक्रिया में कोई अन्तर नहीं है, मूल बात एक ही है कि उन खोजों के द्वारा, उन पदार्थों के द्वारा मस्तिष्क में विशेष प्रकार के रसायनों का निर्माण करना और मस्तिष्क की शक्ति को बढ़ाना या घटाना। दोनों कार्य हो सकते हैं, मस्तिष्कीय शक्ति का विकास भी हो सकता है और ह्रास भी सकता है।

शारीरिक दृष्टि से भोजन के प्रभावों की जितनी खोजें हुई हैं, उतनी खोजें मनुष्य के स्वभाव को रूपान्तरित करने की दिशा में कम हुई हैं। आयुर्वेद में भी कम हुई हैं और एलोपेथिक में भी कम हुई हैं।

आयुर्वेद के आचार्यों ने भोजन के अनेक प्रकार बतलाए हैं– जीवनीय, बृंहणीय, दीपनीय, बल्य आदि–आदि।

एक प्रकार का भोजन वह होता है जो जीवनशक्ति को बढ़ाता है, उनको बनाए रखता है। एक प्रकार का भोजन वह होता है जो बृंहणीय होता है, शरीर को पुष्ट करने वाला होता है। दीपनीय भोजन अग्नि का दीपन करता है। एक प्रकार का भोजन वह होता है जो बल की वृद्धि करता है, और भी अनेक प्रकार हैं।

द्रव्य तीन प्रकार के होते हैं–शमन करने वाले, कुपित करने वाले, संतुलन रखने वाले। कुछ द्रव्य ऐसे होते हैं जो वात, पित्त और कफ का शमन करते हैं। कुछ द्रव्य ऐसे होते हैं जो वात, पित्त और कफ को कुपित करते हैं। कुछ द्रव्य ऐसे होते हैं जो वात, पित्त और कफ को सम अवस्था में रखते हैं, संतुलित रखते हैं, इनके संतुलन को बिगड़ने नहीं देते।

पित्त को कुपित करने वाले द्रव्य क्रोध को भी कुपित करते हैं, पित्त और क्रोध का गहरा संबंध है। जिस व्यक्ति का पित्त कुपित होता है, उसका क्रोध भी कुपित होता है। जिस व्यक्ति का कफ कुपित होता है, उसका लोभ भी कुपित होता है। कफ को कुपित करने वाले द्रव्य लोभ को भी कुपित करते हैं। कुछ व्यक्ति लालची होते हैं। हजार बार उपदेश सुन लेने पर भी उनकी लालची मनोवृत्ति में कोई अन्तर नहीं आता। वे वेचारे क्या करें? उनमें कफ का प्रकोप बना रहता है तब वे उस लालची मनोवृत्ति से कैसे छुटकारा पा सकते हैं? मनोवृत्ति नहीं बदलती। कफ का प्रकोप शांत होते ही लालच की वृत्ति में अन्तर आ जाएगा। कफ और लालच का गहरा संबंध है। वायु को कुपित करने वाले द्रव्य व्यक्ति में निराशा को जन्म देते हैं। जिस व्यक्ति में वायु कुपित रहता है वह व्यक्ति निराश, डिप्रेशन से ग्रस्त, मानसिक अवसाद से युक्त होता है। वायु का और इन सब दोषों का गहरा सम्बन्ध है।

आदमी का जीवन भोजन से बहुत बंधा हुआ है आतिथ्य सत्कार भी इससे प्रारम्भ होता है दो आदमी या दो औरतें जहां भी मिलती हैं, भोजन की चर्चा चल पड़ती है।

एक बार एक व्यक्ति ने अपने मित्र को भोजन के लिए आमंत्रित करते हुए कहा– शादी है भोजन करने जरूर आना। ठीक समय पर मित्र पहुंच गया। उसने देखा निमंत्रण देने वाला मित्र गधे को रगड़–रगड़ कर नहला रहा है। उससे पूछा– क्या कर रहे हो? उत्तर मिला– गधे की आज शादी है। इसे नहला रहा हूं। अरे, गधे की शादी है! भोजन का निमंत्रण दिया था। क्या खिलाओगे? 'मित्र! उतावाले मत हो। जो दुल्हा खायेगा वही तुम्हें खिलाऊंगा।'

भोजन की चर्चा जितनी व्यापक है उतनी व्यापक और कोई चर्चा नहीं है।

भक्तकथा अर्थात् भोजन की कथा। यह कथा अकारण नहीं होती। आदमी भोजन से इतना बंधा हुआ है, जितना वह और किसी से बंधा हुआ नहीं है। भोजन से शरीर बनता है, रक्त बनता है, मांस बनता है और सारी धातुएं बनती हैं। सात धातुओं से परे जो ओज है वह भी भोजन से बनता है। ओज को आज की भाषा में विद्युत् कहा जाता है। सारे रसायन भोजन से निष्पन्न होते हैं।

जीवन का पूरा चक्र भोजन से संचालित होता है। हमारी सारी वृत्तियां भोजन से संचालित होती हैं। भोजन के आधार पर पूरे व्यक्तित्व का अंकन किया जा सकता है। जिस व्यक्ति ने भोजन का यथार्थ मूल्यांकन नहीं किया वह अपने व्यक्तित्व को भी कैसे समझ सकता है? वह अपनी आदतों का विश्लेषण या रूपान्तरण कैसे कर सकता है?

जिज्ञासु ने पूछा– 'इतनी लम्बी चर्चा के बाद यह स्पष्ट समझ में आ गया कि आदतों को बदलने के लिए आहार की शुद्धि बहुत आवश्यक है। पर आप यह बताएं कि आहार–शुद्धि का तात्पर्य क्या है?'

मैंने कहा– मेरे शब्दों में नहीं, मनोनुशासनम् ग्रन्थ के संदर्भ में बता रहा हूं कि जो भोजन हित, मित और सात्विक होता है, वह आहार–शुद्धि है। जो आहार हितकारी होता है, परिमित होता है और सात्विक होता है, वही आहार शुद्ध होता है। यही आहार–शुद्धि है।

पूछने वाला इतने से संतुष्ट नहीं हुआ। उसके मन में अनेक प्रश्न और उभरे। प्रश्नकर्ता स्वतंत्र होता है, उत्तरदाता परतंत्र। उसने आगे पूछा–हित आहार की परिभाषा क्या है?

मैंने कहा– हित क्या है इसकी व्याख्या बहुत लम्बी है। किस दृष्टि से कहा जाए कि हित क्या है? हमारे शरीर के महत्त्वपूर्ण अंग हैं मस्तिष्क, हृदय, लीवर, फेफड़े, तिल्ली और गुर्दे। इन्द्रियां– आंख, कान, नाक, जीभ और त्वचा–ये सभी मुख्य हैं।

पूरा नाड़ी–संस्थान का भी अपना महत्त्व है। इन सबकी दृष्टि से एक साथ हितकर की व्याख्या नहीं की जा सकती। मस्तिष्क के लिए कुछेक पदार्थ हितकर होते हैं। नाड़ी–संस्थान के लिए भिन्न–भिन्न पदार्थ हितकर होते हैं। ज्ञानवाही नाड़ियों के लिए जो पदार्थ हितकर हैं वे क्रियावाही नाड़ियों के लिए हितकर नहीं भी होते। हृदय के लिए कोई एक पदार्थ हितकर होता है तो आंख के लिए कोई दूसरा ही पदार्थ हितकर होता है। बहुत विशाल ज्ञान करना होता है कि किस अवयव की कौन–सा पदार्थ हितकर है।

कुछेक व्यक्ति एकांगी दृष्टि से 'हित' की बात को पकड़ लेते हैं। कई वैद्य कहते हैं– पिप्पल बहुत हितकर होता है। मन्दाग्नि हो, पाचन की कमी हो तो पिप्पल का सेवन हितकर होता है। बात ठीक है। पर इसकी भी एक सीमा है। मदाग्नि के समय पिप्पल का सेवन हितकर हो सकता है। परन्तु जब वह बीमारी मिट गई और व्यक्ति प्रतिदिन उसका सेवन करता ही रहे तो वह पिप्पल भी दोष–संग्रहकारक हो जाएगी। हित की बात देश, काल और मात्रा के साथ जुड़ी हुई होती है। देश, काल और मात्रा की उपेक्षा कर हित की बात नहीं सोची जा सकती।

किसी स्थिति में नमक या क्षार खाना आवश्यक होता है। पर आदमी यदि नमक का सेवन करता रहे तो उसे अनेक व्याधियों का सामना करना पड़ता है। आयुर्वेद के अनुसार हृदयशूल का रोग नमक के अधिक सेवन से होता है। अधिक नमक खाने वाला खल्वाट हो जाता है, गंजा हो जाता है। नमक गुर्दे को कमजोर कर देता है। हृदय के विभिन्न रोगों में नमक कारणभूत होता है। आयुर्वेद का सिद्धांत है– 'पिप्पलक्षारलवणानि, नाधि–कानि भोज्यानि'– ये तीनों अधिक मात्रा में नहीं खाने चाहिए। तीनों हितकर हैं, यदि उनका सेवन मात्रा सहित किया जाता है। तीनों अहितकर हैं, यदि उनका सेवन मात्रा का अतिक्रमण कर किया जाता है। प्राचीन साहित्य में उल्लेख मिलता है कि सौराष्ट्र के लोग नमक का बहुत सेवन करते थे वे चीनी के स्थान पर नमक का प्रयोग करते थे। दूध में भी नमक डालकर पीते थे। इसलिए वे पूंस्त्व को खो डालते और हृदयशूल के शिकार भी हो जाते। कहीं–कहीं नमक का ही शाक बनाया जाता है। जैसे मटर और घीये का शाक होता है वैसे ही नमक का शाक होता है। उसमें भी नमक–मिर्च डाले जाते हैं। नमक को भी नमकीन बनाने का प्रयत्न होता है। इस शाक को वे बड़ी रुचि से खाते हैं। यह शाक किसी भी दृष्टि से हितकर नहीं होता। यह स्वादिष्ट अवश्य होता है, पर हितकर नहीं। मांसाहारी लोग नमक बहुत खाते हैं। मांस को पचाने के लिए नमक की अधिक जरूरत होती है। इसलिए मांसाहार का अर्थ होता है अनेक बीमारियों को निमन्त्रण देना।

हितकर या अहितकर की व्याख्या एकांगी दृष्टि से नहीं की जाती है। अनेक दृष्टियों से उसकी व्याख्या करनी होती है। देश की दृष्टि से हितकर, काल की दृष्टि से हितकर, सार की दृष्टि से हितकर, अवस्था की दृष्टि से हितकर। बच्चे के लिए प्रोटीन की अत्यधिक आवश्यकता होती है। दूध की भी आवश्यकता होती है। पर कोई व्यक्ति बचपन पार कर युवावस्था में चला जाता है और प्रोटीन का अत्यधिक सेवन करता है तो वह अनेक रोगों को निमन्त्रित करता है। अवस्था, काल तथा अन्यान्य स्थितियों को ध्यान में रखकर जब मात्रा सहित किसी पदार्थ का उपयोग करते हैं तो भोजन हितकर होता है। दूध अच्छा भोजन है। परन्तु उसको कब कितनी मात्रा में लेने का सापेक्ष दृष्टिकोण नहीं होता है तो वह अच्छा भी बुरा बन जाता है। अमृत भी विष बन जाता है।

दूसरा प्रश्न है, मित भोजन क्या है? हित के साथ मित जुड़ा हुआ है। यह मात्रा–बोध का सूचक है। कौन–सी वस्तु कितनी मात्रा में लेनी चाहिए, इसका ज्ञान आवश्यक है। मुनि के लिए भोजन का एक दोष है– प्रमाणातिक्रांत। मुनि प्रमाण से अतिरिक्त भोजन करता है तो वह इससे स्पृष्ट होता है। आयुर्वेद के अनुसार 'अधिक खाना' भोजन का एक दोष है। अधिक खाने वाला अनायास ही अनेक रोगों को निमंत्रित कर लेता है।

भोजन के दो प्रकार हैं– हल्का या लघु भोजन और गरिष्ठ भोजन। लघु भोजन वायु प्रधान होता है। उसमें अग्नि तत्त्व अधिक होता है, इसलिए वह सुपाच्य होता है गरिष्ठ भोजन या भारी भोजन जल–प्रधान होता है। वह न वायु प्रधान होता है और न अग्नि तत्त्व प्रधान। इसलिए वह दुष्पाच्य होता है। अधिक खाने पर वह विकृतियां पैदा करता है। राजस्थान प्रांत के कुछेक लोग बहुत मिठाइयां खाते हैं। भोज और मिठाई पर्यायवाची जैसे बन गए हैं। ऐसा एक भी आतिथ्य नहीं जहां मिठाई का भोजन न हो। बिना मिठाई के निमन्त्रण ही कैसा? वे अत्यधिक मिठाई खाते, दूध–दही–मक्खन खाते। सारी चीजें गरिष्ठ ही गरिष्ठ। परिणाम यह हुआ कि वे लोग जब तीस–चालीस वर्ष के होते तो बूढ़े जैसे लगने लग जाते। बुढ़ापे का अनुभव होने लग जाता। शक्तिहीनता के वे शिकार हो जाते। चालीस वर्ष बाद किसी की मृत्यु होती तो माना जाता कि कोई बात नहीं, अवस्था–प्राप्त था। आज यह मान्यता बदल चुकी है। आज चालीस से साठ वर्ष तक का आदमी युवा माना जाता है। गरिष्ठ भोजन आदमी को अकाल में बूढ़ा बना देता है। गरिष्ठ भोजन देखने में सुन्दर, खाने में स्वादिष्ट होता है, पर उसमें अग्नितत्त्व पर्याप्त मात्रा में नहीं होते, अतः वह पूरा पचता नहीं। अर्धपक्व भोजन विकृति पैदा करता है, और असमय में ही आदमी काल–कवलित हो जाता है।

भोजन–विज्ञान में मात्रा का विवेक बहुत जरूरी है। हलके या लघु भोजन की मात्रा भी अधिक नहीं होनी चाहिए। गरिष्ठ भोजन की मात्रा तो और भी कम होनी चाहिए। पर सामाजिक व्यवहार भी अजीब होता है। दस–बीस मित्र मिलते हैं, एक साथ भोजन करने बैठते हैं तो फिर मात्रा का विवेक रहता ही नहीं।

कौर देने वाले का दौर चलता है और उदर–कूप जो भर चुका है, उसको और ठूंस–ठूंस कर भरा जाता है। जब आदमी गले तक भर जाता है तब खाने से हाथ खींचता है। यह इसलिए चलता है कि आदमी को आहार की मात्रा का पूरा ज्ञान नहीं है। हम जाने–अनजाने इस प्रक्रिया से अपने प्रिय व्यक्ति के प्रति भी इतनी शत्रुता का व्यवहार कर देते हैं कि जितना शत्रु, शत्रु के साथ नहीं करता। शत्रु इतना अनिष्ट कर ही नहीं पाता, क्योंकि उसकी प्रत्येक क्रिया को सन्देह की दृष्टि से देखा जाता है। परंतु मित्र या प्रिय व्यक्ति की क्रिया में यह सन्देह नहीं होता सब कुछ अच्छा लगता है। वह एक ओर अनेक बीमारियों को निमन्त्रण देता है और दूसरी ओर प्रियता की अनुभूति करता है। वह सोचता है, आज जैसा स्वागत पीछे कभी नहीं हुआ। बड़ा मजा आया। कितना स्वादिष्ट था भोजन ! कितनी बढ़िया थी सारी सामग्री ! वह भूल जाता है कि भोजन के माध्यम से उसने अनेक बीमारियों को निमन्त्रण दिया है। मात्रा का विवेक बहुत आवश्यक होता है।

तीसरी बात है कि भोजन सात्विक होना चाहिए। यह तथ्य गहरे अनुसंधान के बाद प्रकट हुआ है। जो भोजन चित्त–वृत्तियों में विकृति पैदा न करे, वह होता है सात्विक भोजन। जिस भोजन से शुक्ल लेश्या के विचार जागे, पद्म लेश्या के प्रकंपन में, वह होता है सात्विक भोजन। जिस भोजन के खा लेने पर मन दूषित हो, बुरे विचार आए, उत्तेजना और वासना उभरे, क्रोध और लालच की भावना उग्र हो, हिंसा के भाव जागे, वह भोजन तामसिक या राजसिक होता है। कृष्ण नील और कापोत लेश्या को उभारने वाला भोजन सात्विक नहीं होता। वह होता है तामसिक। वह शरीर के नीचे के केन्द्रों को सक्रिय करता है। सात्त्विक भोजन शरीर के नाभि के ऊपर के केन्द्रों को जगाता है, सक्रिय करता है। इस भोजन से आनन्दकेन्द्र, विशुद्धिकेन्द्र, ज्ञानकेन्द्र, दर्शनकेन्द्र और ज्योतिकेन्द्र सक्रिय होते हैं। भोजन के साथ शरीर का, चैतन्य केन्द्रों का, वृत्तियों का कितना गहरा सम्बन्ध है, इसे जानना आवश्यक है।

आदमी के पास अपार सम्पदा है, भंडार भरा हुआ है, फिर भी वह भिखारी बना हुआ है वह भिखारी, जो अच्छी आदतों को दूसरों से मांगता है, बुद्धि और स्मृति को दूसरों से मांगता है। खोजता फिरता है कि बुद्धि का विकास कैसे हो ? स्मृति कैसे बढ़े ? अच्छा स्वभाव कैसे बने। अच्छी आदत कैसे पनपे ? वह खोजता फिर रहा है। वह अपनी सम्पदा की ओर ध्यान ही नहीं देता। वह पूरा भिखारी है। जो दूसरों से मांगता है वह भिखारी होता है। चौराहे पर बैठकर रोटी–पैसे मांगने वाला ही भिखारी नहीं होता। मांगने वाला हर आदमी भिखारी होता है।

एक भिखारी बैठा था। उसी रास्ते से राजा की सवारी निकल रही थी। पुलिस ने आकर कहा –यहां से हटो। राजा की सवारी आ रही है। भिखारी बोला– क्यों हटू ? रास्ता सबका है। मैं नहीं हटता। राजा कौन होता है हटाने वाला ? पुलिस ने कहा– 'राजा वह होता है जो चाहे सो कर सके। वह इतना समर्थ होता है कि चाहे जिसको देश से निकाल सकता है।' भिखारी बोला– अच्छा, इतना समर्थ होता है राजा ! तो एक काम करो कि इस राज्य में जितने मच्छर हैं, जितनी मक्खियां हैं, उन सबको निकाल दो। यदि वह ऐसा कर देगा तो मैं समझूंगा कि वह राजा है। पुलिस वाला देखता ही रह गया कि कैसा विचित्र है यह भिखारी ! पुलिस वाला बोला–यह तो संभव नहीं है। हमारा राजा ऐसा है जिसके महलों पर रात–दिन पहरा लगता है। भिखारी ने हंसते हुए कहा–वह कैसा राजा ! वह तो कैदी है। जेल में रात–दिन पहरा होता है। राजा से कहो, वह पहरा हटा दे।

इतने में राजा की सवारी पास आ गई। भिखारी राजा के साथ चल पड़ा। रास्ते में एक धर्म–स्थान था। राजा वहां उतरा। अन्दर गया। भगवान् की मूर्ति के समक्ष प्रणाम किया और हाथ जोड़कर बोला, 'प्रभो ! कृपा करें। मेरी सम्पत्ति बढ़े, परिवार बढ़े, वैभव बढ़े, सुख–सुविधा बढ़े।' वह याचना करता ही रहा। भिखारी कोने में खड़ा–खड़ा सुन रहा था। राजा उठा। बाहर आया। भिखारी को देखकर बोला –मांगने आये हो ? मांगो। मिलेगा। भिखारी बोला– आया था मांगने। यही सोचा था कि राजा है, अमीर होगा। वैभवशाली होगा। मुझे देगा। मेरा दारिद्र्य मिट जायेगा। पर मैंने देखा ही नहीं; स्वयं सुना है कि आप तो बहुत बड़े भिखारी हैं। मैं छोटा भिखारी हूं। आप बड़े भिखारी हैं।

आज का आदमी इसी स्थिति से गुजर रहा है। उसके पास शक्तियों का अखूट खजाना है। पर दूसरों से निरंतर याचना करता चला जा रहा है। वह अपनी शक्तियों को पहचान सकता है, यदि उसमें साधना का भाव जागे। साधना का अर्थ है–अपनी शक्तियों को पहचानने का प्रयत्न अपने भीतर अनन्त ज्ञान है, अनन्त आनंद है, अनन्त शक्ति है जब वह उनको पहचानने के लिए पहला कदम उठाता है, तब वह अपने आपको पहचानने में समर्थ होता है।

ध्यान की साधना अपने आपको पहचानने का महान अनुष्ठान है। इस अनुष्ठान की सफलता तभी है जब आदमी अपने आपको बदल दे, रूपांतरित कर दे। रूपान्तरण के लिए आहार–शुद्धि का अभ्यास आवश्यक है। हित आहार, मित आहार और सात्विक आहार के अभ्यास से रूपांतरण घटित होने लगता है। जैसे–जैसे यह अभ्यास बढ़ता है, शरीर की विद्युत बदलती है, रसायन बदलते हैं, चैतन्य–केन्द्रों की सक्रियता बढ़ती है। जो केन्द्र सोने योग्य होते हैं, वे सो जाते हैं और जो जागने योग्य हैं, वे जाग जाते हैं। नीचे के केन्द्र सो जाते हैं और ऊपर के केन्द्र जाग जाते हैं। जिस दिन यह जागृति होती है, उस दिन नई दुनिया का अनुभव होता है, नये जीवन की अनुभूति होती है और तब आदमी इस स्वर में कह सकता है जो

सम्पदा आज तक नहीं मिली, वह आज हस्तगत हो गई। जो जागृति आज तक नहीं आई, वह आज घटित हो गई।

जिज्ञासा : समाधान

प्रश्न :– आहार के द्वारा रसायन बदलते हैं और रसायनों से प्रवृत्तियां बदलती हैं। आज कृत्रिम रसायनों के द्वारा प्रवृत्तियों के बदलने के प्रयोग चल रहे हैं। फिर उनमें और ध्यान में अन्तर क्या रहा ?

उत्तर :– रसायनों का निर्माण केवल आहार के द्वारा ही नहीं होता, भावना के द्वारा भी महत्त्वपूर्ण ढंग से होता है। हम भावनाओं के द्वारा भी महत्त्वपूर्ण रसायनों को निर्मित कर सकते हैं, रसायनों को बदल सकते हैं। रसायनों को बदलने की सबसे उचित प्रक्रिया है ध्यान। आहार ध्यान में सहायक बनता है। उचित आहार के द्वारा उचित रसायनों का निर्माण होता है। उससे ध्यान में सहयोग मिलता है, प्रवृत्तियों की निर्मिति में और उनके रूपांतरण में सहयोग मिलता है। कृत्रिम रसायन निरापद नहीं होते। उनके साथ खतरे भी जुड़े हुए हैं। इस तथ्य को स्वयं वैज्ञानिक भी स्वीकार करते हैं। गोबर की खाद स्वाभाविक होती है। उससे बहुत अच्छा अनाज पैदा होता है। कृत्रिम खादों से अनाज के साथ–साथ विष भी पैदा होता है। कृत्रिम खाद की तरह ही है कृत्रिम रसायन। वे खतरे से खाली नहीं हैं। कृत्रिम रसायनों का अधिक प्रयोग चूहों पर, बन्दरों पर हो रहा है। अभी मनुष्यों पर विशेष प्रयोग नहीं हो रहे हैं। खतरे बहुत लगते हैं। स्वाभाविक भोजन और ध्यान की प्रक्रिया के द्वारा यदि हम रसायनों को बदलते हैं तो यह अत्यन्त निरापद और लाभप्रद होता है।

प्रश्न :– अतीन्द्रिय ज्ञान (अवधि ज्ञान) के आपने पांच प्रकार बतलाए– आगे का, पीछे का, दाएं का, बाएं का और नीचे का बात समझ में नहीं आई। स्पष्ट करें।

उत्तर :– जब अवधिज्ञान की उपलब्ध होगी तब पूरी बात समझ में आएगी। किंतु कुछेक तथ्य तो अवश्य ही ज्ञात हुए हैं। हमारे शरीर में जो नाड़ी–संस्थान हैं, उसमें एक है सेन्ट्रल नर्वस सिस्टम केन्द्रीय नाड़ी–संस्थान शरीर के दाएं–बाएं दो नाड़ी–संस्थान हैं– सिम्पेथेटिक और पेरासिम्पेथेटिक। इनमें से जो शाखाएं निकली हैं वे आगे भी हैं। चैतन्य–केन्द्रों का उद्‌गम पीछे से प्रारम्भ होता है और आगे तक आ जाता है। इसलिए प्रेक्षा–ध्यान के संदर्भ में हम शरीर के आगे के भाग में भी ध्यान करते हैं और पीछे के भाग में भी ध्यान करते हैं। ध्यान जब परिपक्व होता है तब दाएं–बाएं भी ध्यान करना होता है। ऊपर (सिर पर) भी ध्यान करते हैं। इस प्रकार साधना का उद्देश्य होता है – शरीर को स्फटिक–सा पारदर्शी बना देना।

अतीन्द्रिय ज्ञान की उपलब्धि के लिए शरीर को पारदर्शी बनाना आवश्यक होता है। जब तक शरीर पारदर्शी नहीं हो जाता, जब तक शरीर के मुख्य केन्द्रों को चुम्बकीय क्षेत्र नहीं बना दिया जाता तब तक ज्ञान की रश्मियां छनकर बाहर नहीं आ सकती। दिया जल रहा है। उस पर सघन ढक्कन लगा दिया तो प्रकाश बाहर नहीं आयेगा, भीतर ही रह जायेगा। यदि उस दिए पर जालीदार ढक्कन लगा दिया जाता है तो प्रकाश छन–छन कर बाहर आएगा और यदि ढक्कन पारदर्शी है तो प्रकाश चारों ओर से फैलेगा।

ज्ञान के प्रगटीकरण के लिए चैतन्य–केन्द्रों को निर्मल बनाना अत्यन्त आवश्यक है।

कुछ लोग पूछते हैं, जैन साधना पद्धति में चैतन्य–केन्द्रों की चर्चा कहां है ? उन्हें ज्ञान होना चाहिए कि अवधिज्ञान की सारी चर्चा चैतन्य केन्द्रों की चर्चा है। पांच प्रकार से अभिव्यक्त होने वाले अवधिज्ञान की चर्चा चैतन्य केन्द्रों की चर्चा है। निशीथ और नन्दी के चूरणिकार ने अतीन्द्रिय ज्ञान को इन्हीं उदाहरणों से समझाया है कि दिये पर रखे हुए जालीदार ढक्कन से जैसे प्रकाश–रश्मियां बाहर फैलती हैं वैसे ही शरीर का जो भाग, जो केन्द्र निर्मल हो जाता है उसमें से ज्ञान–ज्योति की रश्मियां फैलती हैं। इसलिए अवधिज्ञान के दो विकल्प किए गए–

देशावधि– शरीर के एक भाग से होने वाला ज्ञान !

सर्वावधि– समूचे शरीर से प्रकट होने वाला ज्ञान। शरीर के किसी भी भाग से वह ज्ञान प्रगट हो सकता है। एक अंगुली से अवधिज्ञान हो सकता है। अंगुली इतनी पारदर्शी बन जाती है कि उससे ज्ञान की रश्मियां निकलने लगती हैं। अंगुली को काम में मत लो, अवधिज्ञान नहीं होगा। साधना के क्षेत्र में यह बहुत महत्त्वपूर्ण चर्चा है।

प्रश्न :– चित्त और मन में क्या अन्तर है। इच्छा कैसे पैदा होती है ?

उत्तर :– चित्त है स्वामी। मन है उसका नौकर। चित्त है चेतना का तन्त्र और मन है मस्तिष्क के द्वारा क्रिया करने वाला तंत्र। यह चेतना का तंत्र नहीं है, किन्तु शरीर का तन्त्र है जिसमें चेतना आती है। चित्त है शरीर के साथ काम करने वाली चेतना।

इच्छा की उत्पत्ति का स्रोत बहुत गहरे में है। इच्छा इस शरीर में पैदा नहीं होती। इच्छा पैदा होती है अवचेतन में। अध्यात्म की भाषा में कहा जा सकता है कि इच्छा पैदा होती है अध्यवसाय में, लेश्या में। इच्छा का संबंध केवल वर्तमान शरीर से नहीं, वर्तमान जीवन से नहीं, किंतु अतीत के अनेक जन्मों तथा अतीत के साथ काम करने वाले सूक्ष्म शरीरों के साथ जुड़ा होता है। इसलिए इच्छा बाहर के निमित्तों से भी हो सकती है और आंतरिक निमित्तों से भी हो सकती है। भीतर में इच्छा का अजस्र स्रोत बह रहा है, निमित्त के मिलने पर इच्छा बाहर प्रकट हो जाती है। बहुत गहरे में उतरकर हमें इच्छा का अध्ययन करना होगा।

–आचार्य महाप्रज्ञ

('मैं कुछ होना चाहता हूँ' से साभार)

ऊँची उड़ान

गिद्धों का एक झुण्ड खाने की तलाश में भटक रहा था। उड़ते–उड़ते वे एक टापू पर पहुँच गए। वो जगह उनके लिए स्वर्ग के समान थी। हर तरफ खाने के लिए मेंढक, मछलियाँ और समुद्री जीव मौजूद थे और इससे भी बड़ी बात ये थी कि वहां इन गिद्धों का शिकार करने वाला कोई जंगली जानवर नहीं था और वे बिना किसी भय के वहां रह सकते थे। युवा गिद्ध कुछ ज्यादा ही उत्साहित थे, उनमें से एक बोला, ''वाह! मजा आ गया, अब तो मैं यहाँ से कहीं नहीं जाने वाला, यहाँ तो बिना किसी मेहनत के ही हमें बैठे–बैठे खाने को मिल रहा है!'' बाकी गिद्ध भी उसकी हाँ में हाँ मिला खुशी से झूमने लगे।

सबके दिन मौज–मस्ती में बीत रहे थे लेकिन झुण्ड का सबसे बूढ़ा गिद्ध इससे खुश नहीं था। एक दिन अपनी चिंता जाहिर करते हुए वो बोला, ''भाइयों, हम गिद्ध हैं, हमें हमारी ऊँची उड़ान और अचूक वार करने की ताकत के लिए जाना जाता है। पर जबसे हम यहाँ आये हैं हर कोई आराम तलब हो गया है, ऊँची उड़ान तो दूर ज्यादातर गिद्ध तो कई महीनों से उड़े तक नहीं हैं और आसानी से मिलने वाले भोजन की वजह से अब हम सब शिकार करना भी भूल रहे हैं। ये हमारे भविष्य के लिए अच्छा नहीं है, मैंने फैसला किया है कि मैं इस टापू को छोड़ वापस उन पुराने जंगलों में लौट जाऊँगा। अगर मेरे साथ कोई चलना चाहे तो चल सकता है!''

बूढ़े गिद्ध की बात सुन बाकी गिद्ध हंसने लगे। किसी ने उसे पागल कहा तो कोई उसे मूर्ख की उपाधि देने लगा। बेचारा बूढ़ा गिद्ध अकेले ही वापस लौट गया। समय बीता, कुछ वर्षों बाद बूढ़े गिद्ध ने सोचा, ''ना जाने मैं अब कितने दिन जीवित रहूँ, क्यों न एक बार चल कर अपने पुराने साथियों से मिल लिया जाए!'' लम्बी यात्रा के बाद जब वो टापू पर पहुंचा तो वहां का दृश्य भयावह था। ज्यादातर गिद्ध मारे जा चुके थे और जो बचे थे वे बुरी तरह घायल थे।

''ये कैसे हो गया ?'', बूढ़े गिद्ध ने पूछा।

कराहते हुए एक घायल गिद्ध बोला, ''हमें क्षमा कीजियेगा, हमने आपकी बातों को गंभीरता से नहीं लिया और आपका मजाक तक उड़ाया। दरअसल, आपके जाने के कुछ महीनों बाद एक बड़ा सा जहाज इस टापू पर आया और चीतों का एक दल यहाँ छोड़ गया। चीतों ने पहले तो हम पर हमला नहीं किया, पर जैसे ही उन्हें पता चला कि हम सब न ऊँचा उड़ सकते हैं और न अपने पंजों से हमला कर सकते हैं उन्होंने हमें खाना शुरू कर दिया। अब हमारी आबादी खत्म होने की कगार पर है... बस हम जैसे कुछ घायल गिद्ध ही ज़िंदा बचे हैं !'' बूढ़ा गिद्ध उन्हें देखकर बस अफ़सोस कर सकता था, वो वापस जंगलों की तरफ उड़ चला।

मित्रों, अगर हम अपने बुद्धि का प्रयोग नहीं करते तो उसकी तीक्ष्णता घटती जाती है और अगर हम अपनी मांसपेशियों की शक्ति का प्रयोग नहीं करते तो उनकी ताकत घट जाती है। इसी तरह अगर हम अपनी योग्यता को चमकाएंगे नहीं तो हमारी काम करने का मनोबल कम होता जाता है। ऐसा मत करिए... अपनी काबिलियत, अपनी ताकत को जिंदा रखिये... अपने कौशल, अपने हुनर को और तराशिये, उस पर धूल मत जमने दीजिये और जब आप ऐसा करेंगे तो बड़ी से बड़ी मुसीबत आने पर भी आप ऊँची उड़ान भर पायेंगे।

महासभा सहायता

★ **श्री पवन जी जैन** (चौधरी) 1/544, काला कुंआ हा. बोर्ड, अलवर ने अपनी सुपुत्री सौ.कां. शिखा जैन (सी.ए.) संग चि. सौरभ जैन सुपुत्र श्री प्रदीप जैन (खिलौने वाले), पालम (दिल्ली) के दिनांक 25.11.2020 को सम्पन्न शुभ विवाहोपलक्ष पर रु. 5100/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4868)*

★ **श्री सतीश चन्द जी जैन,** निवासी डब्ल्यू जेड–1198, पालम गांव, नई दिल्ली–45 ने अपनी सुपुत्री सीमा जैन, सीए के दि. 1.12.2020 को सम्पन्न शुभ विवाह उपलक्ष पर रु. 500/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4844)*

★ **श्री विकास जी जैन, विशाल जी जैन,** नोगावां अलवर ने अपनी पूज्यनीय माताजी स्व. श्रीमती रत्नमाला जी जैन धर्मपत्नी स्व. श्री ज्ञानचन्द जी जैन (पूर्व सरपंच नोगावां) की पुण्य स्मृति में रु. 1100/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4845)*

विधवा सहायता

श्री आर.सी. जैन (सेनि. आई.ए.एस.) अध्यक्ष, महासभा एन-19, आदिनाथ नगर, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर ने अपनी बड़ी बहन श्रीमती मायावती जी जैन धर्मपत्नी स्व. श्री सुगनचन्द जी जैन (जनकपुरी, दिल्ली) की पुण्य स्मृति (दि. 12.1.2021) में रु. 12,000/- सप्रेम भेंट किए। ***(र.सं. 4795)***

पूज्य पिताजी स्व. श्री कपूरचन्दजी जैन व माताजी स्व. श्रीमती अंगूरी देवी जैन की
पुण्य स्मृति में

विमल चन्द जैन (रेता वाले)

ग्रुप ऑफ कम्पनीज

DEALERS & SUPPLIERS OF SILICA SAND & OTHER GLASS RAW MATERIAL

AKHIL JAIN (M) 9899823557 • ANKIT JAIN (M) 9837478564

★ The Rajasthan Silica Sand Suppliers
★ Santosh Mineral & Chemical Co.
★ S.B. Jain Mineral Enterprises
★ Super Fine Mineral Traders
★ Shree Vimal Silica Traders
★ Quality Silica Traders

128-129, गणेश नगर,
सेक्टर प्रथम,
पानी की टंकी के सामने,
फिरोजाबाद (उ.प्र.)
सम्पर्क : 098372-53305
090128-74922
05612-260096

भावभीनी श्रद्धांजलि

स्व. श्री सुगन चंद जैन
(स्वर्गवास : 3 जून 2000)

स्व. श्रीमती सोमोती देवी जैन
(स्वर्गवास : 3 जनवरी 2015)

हम सभी परिजन आपके उच्च विचारों तथा आदर्शों को जीवन में उतारने के लिए प्रयत्नशील हैं।

श्रद्धावनत

पुत्र-पुत्रवधू :
बाबूलाल-(स्व.) लक्ष्मी जैन
श्रीपाल-उर्मिला जैन
(स्व.) महावीर प्रसाद-त्रिशला जैन
शिखर चंद-उषा जैन
किशनचंद-ब्रजबाला जैन

पौत्र-पौत्रवधू :
योगेश-रश्मि
ज्ञानेश-गीता
कमल-अंशु
नितिन-अंशु
अंकुर-कविता
सचिन-शालू

पौत्री-दामाद :
ममता-(स्व.) अनिल जैन
कल्पना-राजेश जैन
मीनू-ललित जैन
पूनम-वर्धमान जैन
सविता-वेद प्रकाश जैन
अनिषा-सागर जैन
कविता-प्रदीप जैन
राखी-अमित जैन
आरती-कपिल जैन
दीपा-नितिन जैन

पुत्री-दामाद :
कमला-हरिशचंद जैन
विमला-नरेशचंद जैन
गुणमाला-जितेन्द्र कुमार जैन
बबली-जिनेश कुमार जैन
अरूणा-अनिल कुमार जैन

पड़पौत्री-दामाद :
अक्षिता-मुकुल जैन

पड़पौत्री, पड़पौत्र :
शुभम, संभव, विशुता, तान्या, यश,
प्रत्यक्ष, निश्चय, रचित, रेयांश, दीया, दक्षिता, युग

प्रतिष्ठान :
जैन पान भंडार, नौगावा, अलवर, फोन : 01468-275238
अरिहंत पैकेजिंग, महावीर एन्कलेव, नई दिल्ली, फोन : 25367174, 25052070
जैन प्रोविजन एण्ड जनरल स्टोर, पालम कॉलोनी, फोन : 65170979
जैन बुटिक, पालम कॉलोनी, फोन : 65170979

निवास : **नौगावा, जिला अलवर (राज.), फोन : 01468-275238**

भावभीनी श्रद्धांजलि

स्व. श्री बाबूलाल जी जैन

(स्वर्गवास : 02.01.2014)

स्व. श्रीमती प्रेमलता जी जैन

(स्वर्गवास : 11.09.2003)

(शाहदरा देहली)

हम सभी परिवारजन आपको शत-शत नमन एवं स्मरण करते हुए श्रद्धापूर्वक अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

श्रद्धावनत

पुत्र-पुत्रवधु :
पारस-कंचन जैन, शाहदरा, देहली
अनिल-लक्ष्मी जैन, जयपुर
अजय-रीता जैन, अलवर
विनय-पूनम जैन, शाहदरा, देहली

पौत्र-पौत्रवधु :
एडवोकेट कपिल-प्रियंका जैन, जयपुर
डॉ. वैभव-डॉ. शिवि जैन, वाराणासी

पौत्र, पौत्री :
डॉ. दीपक, ऐश्वर्य, विशाल, स्वाति, हर्ष

दोहिता, दोहिती :
मोहित, प्रतिभा जैन

पड़पोती :
शानवी जैन

पुत्री-दामाद :
स्नेह-नरेन्द्र जैन, रावतभाटा
ममता-प्रदीप जैन, जयपुर

पौत्री-दामाद :
मीतू-मोहित जैन, गाजियाबाद
भावना-वरूण जैन, दिल्ली

दोहती-दामाद :
कृति-विकास जैन, नोएडा
प्रेरणा-विनय जैन, ग्वालियर
महिमा-सी.ए. राहुल जैन, मुम्बई

पड़दोहिता, पड़दोहिती :
निकुंज, धवल, वर्तिका,
सम्भव, प्रनव, पहल

निवास :
57, स्कीम 8 एक्सटेंशन, गांधीनगर विस्तार, अलवर,
फोन : 0144-2702961, मो.: 9718805709

With Best Compliments From

Authorised Distributor for

- ★ Johnson & Johnson Ltd.
- ★ SD. BIO SENSOR
- ★ Ortho Clinical Diagnostics
- ★ Lifescan-Division, for one touch Brand Glucometers & Strips.
- ★ Biorad Laboratories
- ★ Alere Medical
- ★ Transasia Biomedical Ltd.
- ★ LILAC Medicare

Sanjay Jain - Rajeev Jain

S.R. Enterprises

223, Bichoon Market, Kishanpole Bazar, Jaipur-302 003
Ph.: (O) 2322089, 2323903 (R) 2546017 • Fax : 0141-4022089
(M) +91-98290 12628, 94140 76265

कहानी

अमरूद का पेड़

जैसे महाजन अपने बढ़ते धन को देखकर खुश होता है, किसान अपने लहलहाते खेतों को देखकर खुश होता है, माता अपने प्रिय पुत्र को देखकर खुश होती है, नवीनजी अपने बाहर आंगन पर लगे अमरूद के पेड़ को देखकर खुश होते थे। न जाने उन्हें इस पेड़ से क्यों लगाव हो गया था। कोई पाँच साल हुए, उन्होंने नर्सरी से लाकर इसका पौधा लगाया था। बड़े जतन से इसकी देखभाल करते थे। समय–समय पर खाद, पानी, सब कुछ मुहैया करवाते थे।

समय जाते देर नहीं लगती। पेड़ भी अपने कद्रदान के घर आकर ऐसा फूला–फला जैसे शुक्ल पक्ष का चन्द्रमा। वर्ष–दर–वर्ष पेड़ बढता गया और कुछ ही वर्षों में फलों से लद गया शाम आंगन में आराम कुर्सी पर इस पेड़ के साये में बैठकर नवीनजी की सारी थकावट दूर हो जाती थी। बच्चा जवान होकर जब सुपुत्र हो जाता है तो माता–पिता उसके पालने में उठाई सारी पीड़ा को भूल जाते हैं। ठीक यही हाल नवीनजी का इस पेड़ को लेकर था।

नवीनजी जिनका पूरा नाम नवीनचन्द्र दत्ता है अब प्रौढ़ हो चुके हैं। सर पर कुछ–कुछ बाल ही नजर आते हैं जैसे विदा लेते यौवन के अवशेष हो, परन्तु उनका ललाट देदीप्यमान है तथा चेहरे से सौम्य एवं विद्वान नजर आते हैं। हृदय से अत्यंत दयालु है एवं उन्हें देखते ही लगता है जैसे कोई भला उपकारी आदमी हो। कॉलोनी में उनकी सबसे अच्छी मित्रता है, दरअसल उनके सहज स्वभाव के कारण लोग उनसे अक्सर मिलने आते थे। सबके सुख–दुःख में बढ़–चढ़कर काम आते थे वो। शादी हुए कोई 20 वर्ष हो गए, एक बेटा एक बेटी है – मुकुल एवं मालती। पत्नी शालिनी समझदार एवं व्यावहारिक है पर उन्हें मूर्ख ही समझती है उसे अच्छी तरह से मालूम है कि मेरे पतिदेव को सभी मूर्ख बनाते हैं, सभी उनकी झूठी तारीफें करते है एवं कलेक्टरेट में इनकी नौकरी के जरिए काम निकालते रहते हैं। उनके बच्चों का नजरिया भी अपने पिता के बारे में ऐसा ही है, नौकरी करते बीस वर्ष हो गए, अभी भी बाबू ही हैं। प्रमोशन के नाम पर हर बार धत्ता। प्रमोशन परिणाम के दिन हर बार मुँह लटकाये चले आते हैं, पूछने की जरूरत ही नहीं है, उनका चेहरा ही उनका दर्पण है। नवीनजी चुपचाप सह लेते हैं यह सब। उन्हें मालूम है भले एवं अच्छे इंसान के लिए इस दुनिया में वितृष्णा के अतिरिक्त कुछ नहीं है, उसकी खुशी तो उसके आत्म संतोष में ही छिपी है।

इस बार सीजन में अमरूद के पेड़ पर बहुत फल आए पेड़ जैसे अमरूदों से लद गया टप–टप करके ऊपर से ढेर सारे अमरूद सुबह गिरते तो नवीनजी उन्हें धोकर कुछ घर में रखते, कुछ तुरन्त ही कॉलोनी में भिजवा देते। घर से बाहर निकलते तो लोग कह ही देते, ''भई नवीनजी आपके पेड़ जैसे मीठे अमरूद तो कभी नहीं खाए''। नवीनजी को इससे एक भीतरी खुशी मिलती थी। शायद अमरूद का पेड़ भी इसे कहीं से सुन लेता था, प्रशंसित होकर बढ़–चढ़कर फल देता। सुबह–शाम पेड़ पर न जाने कितने पक्षी, कोयल, कौवे, कबूतर, मोर आते थे एवं फल खाकर जाते थे । कॉलोनी के बच्चे तो उस पेड़ के इर्दगिर्द ही रहते थे। उन्हें तो जैसे स्वर्ग मिल गया था। उन्मत्त शैशव को और क्या चाहिए। सबको मालूम था नवीनजी कुछ नहीं कहने वाले। ऑफिस से आते–जाते इन बच्चों को देखकर नवीनीजी का हृदय भीग जाता, लगता उनके जीवन से कोई एक छोटा–सा अर्थ निकल आया हो। सज्जन इंसान की यही निशानी है, मिट्टी किसी की भीगती है परन्तु तृप्ति उसको मिलती है। दुःख किसी को पहुँचता है, परन्तु पीड़ा उसके अंतस में उभरती है।

आज ऑफिस से आते हुए वे चार–पाँच लोहे के हुक लगवाकर बांस ले आए थे। घर आते ही पत्नी, बच्चों ने टोका, ''ये क्या कर रहे हैं आप! क्या आपको मालूम है इससे हमें कितनी तकलीफ होती है? सारे दिन बच्चे मुंडेर पर बैठे रहते हैं, पक्षी अधपके फल गिराते रहते हैं, सफाई कर कर के थक जाते हैं और आप यह बांस भी ले आए? कुछ और भी कसर रह गई थी।'' बड़े सहज भाव से नवीनजी ने कहा, ''भाग्यवान, बच्चों को बहुत तकलीफ होती है। अभी कल ही पड़ोसी गिरीशजी के बच्चे अमरूद तोड़ते हुए गिर गए थे। मैंने सोचा, बांस छप्पर पर रख दें तो बच्चे छप्पर से लेकर बांस से अमरूद तोड़ लेंगे।'' एम.ए. फर्स्ट क्लास पत्नी ने सर पीट लिया। मन–ही–मन कुढ़ी और खीज कर रह गई। एक यही बेवकूफ मिला था जगत में मेरे लिए। लेकिन नवीनजी चुप। अमरूद का पेड़ भी उनके साथ चुप खड़ा था, मानो कह रहा था कि संसार के मूर्खों में तुम अकेले नहीं हो। लेकिन दोनों दाता होने के सुख को जानते थे। धरती जैसे धन–धान्य से भरकर सब कुछ अपनी संतानों को दे दती है, वैसे ही विसर्जन के सारगर्भित सुख से नवीनजी मालामाल थे।

इस बार तो सीजन में इतने फल आए कि कॉलोनी के लोग तो क्या पक्षी भी निहाल हो गए। यहां तक कि गाय, बकरियाँ भी अधपके फलों को खाने के लिए आने लगी। सभी उस पेड़ को दुआ देते थे एवं इन दुआओं के मिलते अमरूद का पेड़ हर वक्त फलों से भरा मिलता था। कल्पवृक्ष

हो गया था पेड़। उपकारी व्यक्ति की संपत्ति जैसे कभी खाली नहीं होती वैसे ही हालत पेड़ की थी। प्रकृति का यह गूढ़ रहस्य नवीनजी के साथ–साथ पेड़ को भी समझ में आ गया था।

शायद किसी की दुआ नवीनजी को भी लग गई। इस साल उनका वर्षों से रुका प्रमोशन हो गया। अब वे अपने महकमे में अधिकारी हो गए लेकिन प्रमोशन के साथ ही उनका स्थानान्तरण भी जोधपुर से 350 किलोमीटर दूर जयपुर हो गया। नवीनजी की वर्षों की मुराद पूरी हुई। बुढ़ापे में उन्हें ''बाबूजी'' सुनना बहुत बुरा लगता था। सोचा कम से कम बच्चों की शादी में तो कह पाऊंगा कि मैं सरकार में अफसर हूँ। अफसर आखिर अफसर ही होता है। बाबू को तो सब्जीवाला भी सलाम नहीं करता । पैसा ही सब कुछ थोड़े ही है, इज्जत भी तो कुछ चीज है । इंसान की मनःस्थिति के अनुकूल ही उसके विचार बन जाते हैं। चूंकि दूसरी जगह तुरंत रिपोर्ट करना था, अतः आनन–फानन में ही सामान पैक हो गया उन्होंने मकान मालिक को हिसाब कर चाबी पकड़वा दी, कहा, ''हम सभी कल यहां से चले जाएंगे।'' नई जगह की नई तकलीफें नवीनजी के जेहन में घूमने लगी थीं रात बराबर सो भी नहीं पाए।

सुबह सूर्य जल्दी ही उग आया था, शायद उसे भी नवीनजी को विदाई देनी थी। अच्छे दिनों में समय जाते देर नहीं लगती। ऑगन में हल्का सुनहरा प्रकाश बिखरने लगा था। अमरूद का पेड़ आँगन में यथावत् खड़ा था, पत्तियों पर ओस की बूँदें सुहावनी लग रही थी। नवीनजी ने एक–एक कर सारा सामान बाहर भिजवाया एवं घर खाली होने पर आँगन में आए। अब तक बच्चे एवं पत्नी भी बाहर जा चुकी थी। नई सरकारी गाड़ी में बैठने की सबको जल्दी थी।

अमरूद का पेड़ जैसे उन्हें विदाई देने को खड़ा था, मूक और प्रगल्भ। उसे देखते भाव विभोर हो गए । कसके पकड़ लिया उसे और फफक कर रो पड़े। इस शहर को छोड़ते हुए उन्हें सर्वाधिक दुःख इस पेड़ को छोड़ने का हो रहा था, मानो कोई भाई–भाई से बिछुड़ रहा हो। संभलकर उन्होंने उस पर प्यार से हाथ फेरा, जैसे उसे समझा रहे हो कि इस जीवन में कौन हमेशा साथ रहा है। हर रिश्ते की एक उम्र होती है, शायद तुम्हारा मेरा इतना ही साथ हो। नवीनजी शायद वहीं खड़े रहते पर बाहर से बिटिया की आवाज सुनकर चौंके, ''पापा, कॉलोनी के सब लोग, बच्चे आपका बाहर इंतजार कर रहे हैं।''

नवीनजी बाहर आए और आश्चर्य चकित रह गए। कॉलोनी के सभी लोगों ने उन्हें फूलों से लाद दिया। बच्चे–बूढ़े सभी उन्हें बाहर सरकारी गाड़ी तक छोड़ने आए। गाड़ी में बैठते–बैठते भी वो अमरूद का पेड़ देखना न भूले। शायद कह रहे हों, ''मित्र, फिर मिलेंगे!''

समय कितना जल्दी बीत जाता है, पता ही नहीं चलता। नये काम की आपाधापी एवं जिम्मेदारी में नवीनजी को पता ही नहीं चला कि जोधपुर छोड़े दो वर्ष हो गए। इन्हीं दिनों ऑफिस के काम से कोर्ट की एक पेशी के सिलसिले में उन्हें जोधपुर जाना पड़ा। जोधपुर सुबह पहुँच कर उन्होंने सोचा पहले कोर्ट का ही काम कर लिया जाय। होटल से तैयार होकर वो सीधा कोर्ट पहुँचे। पेशी से आते– आते उन्हें दो बज गए। सीधे होटल पहुँचकर कमरा खाली किया एवं गाड़ी में नीचे आकर बैठ गए। ड्राइवर उनका इंतजार ही कर रहा था।

गाड़ी में जाते–जाते उन्हें पुराने घर की याद हो आई । पुरानी स्मृतियों कुरेदने लगी। कॉलोनी रास्ते पर ही थी, सोचा लगे हाथों सभी से मिल लें। पुरानी यादें ताजा हो आईं। अमरूद का पेड़ देखने को उनका अंतस तड़प उठा। वे सीधे अपने पुराने घर में गए और यह देखकर अचंभित हो गये कि वहां अब कोई पेड़ नहीं था। नए किरायेदार ने बताया कि पेड़ कुछ समय पूर्व गिर गया एवं उसे फिकवा दिया गया इसी दरम्यान कॉलोनी के गिरीशजी वहां आ गए एवं उन्हें दूर एक तरफ ले गए। कहने लगे ''नवीनजी! क्या बताएं, आपके जाने के बाद से ही इस पेड़ के बुरे दिन आ गए। नये किरायेदार शर्माजी कड़क आदमी हैं, उन्होंने पेड़ पर किसी को नहीं चढ़ने दिया। बच्चे भी डर से अब मुंडेर पर नहीं जाते। पक्षियों को गिलोल से मारते रहते हैं एवं पेड़ के फल बाँटने का तो सवाल ही नहीं । सिवाय खुद के खाने के किसी और को फल देना तो इन्होंने सीखा ही नहीं। थोड़े ही दिनों में जैसे पेड़ को नजर लग गई। पेड़ में कीड़े लग गए। इस वर्ष कोई फल नहीं आया, थोड़े दिनों में ही पेड़ ढूँठ हो गया एवं गिर गया।'' नवीनजी को जैसे सदमा लगा।

चुपचाप आकर गाड़ी में बैठ गए एवं ड्राइवर को गाड़ी चलाने को वे कहा। गाड़ी में आते ठण्डे झोंकों से शायद उनका मन शांत हुआ। सोचा यह प्रकृति अपने आप में कितनी पूर्ण है। जब तक फल बंट रहे थे, फल आ रहे थे। ज्योंही संचय शुरू हुआ, जैसे गंगौत्री ही कट गई। जो देना नहीं जानता उसे प्रकृति देती भी नहीं है। एक अजीब–से विषाद भरे इस ज्ञान के मर्म को सोचते–सोचते न जाने कब उनकी आँख लग गई।

–हरिप्रकाश राठी
(कहानी संग्रह 'अगोचर' से साभार)
सी–136, कमला नेहरू नगर, प्रथम विस्तार, जोधपुर

भावभीनी श्रद्धांजलि

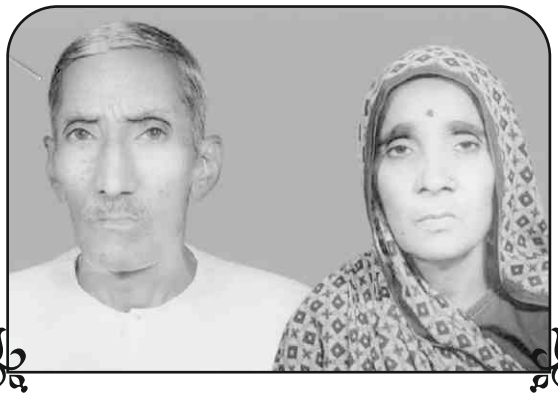

पूजनीय पिताजी स्व. श्री प्यारेलाल जी जैन चौधरी
श्रद्धेय माताजी स्व. श्रीमती असरफी देवी जी जैन
(मूल निवासी - मौजपुर, अलवर)

स्व. श्रीमती इन्दु जी जैन
(धर्मपत्नी श्री पदम चन्द जैन)
(स्वर्गवास : 30.12.2018)

हम सभी परिवार के सदस्य सादर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुये भगवान वीर से उनकी चिर आत्मीय शांति की प्रार्थना करते हैं।

श्रद्धावनत

पुत्र :
पदम चन्द जैन
पौत्र-पौत्रवधु :
पारस जैन-रश्मि जैन,
पौत्री-दामाद :
डिम्पल-राजेश जैन
सिम्पल-नितिन जैन
प्रिती-उत्तम कोठारी
पड़पोत्री-पौत्र :
चेल्सी जैन-अक्षत जैन

पुत्र :
अनूप चन्द जैन
पौत्र-पौत्रवधु :
हेमन्त जैन-मधु जैन
पौत्री-दामाद :
सुनिता-सुनिल
अनिता-परवेश
विनिता-प्रताप
पड़पौत्र :
रोबीन-मानस

निवास:- बी-52, कीर्ति नगर, टोंक रोड, जयपुर
फोन : 0141-2706317, 9829066317, 9414055855

शाखा अलवर द्वारा जैन क्रिकेट प्रिमियम लीग का आयोजन

अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा शाखा अलवर द्वारा जैन क्रिकेट प्रिमियम लीग का सफलता पूर्वक आयोजन किया गया।

लीग प्रतियोगिता का शुभारंभ भाजपा के जिला महामंत्री श्री पवन जैन पटवारी, श्री आदिनाथ जैन शिक्षण संस्थान के अध्यक्ष श्री विजय जैन ने किया। चित्र अनावरण अ.भा.प. जैन महासभा के अलवर शाखा अध्यक्ष श्री वी.के. जैन व गुलाब जैन मसाले वाले ने किया। दीप प्रज्वलन मुंशी बाजार जैन मंदिर के अध्यक्ष श्री मुकेश जैन, खंडेलवाल जैन मंदिर के अध्यक्ष श्री कुलदीप जैन, अग्रवाल दिगंबर जैन मंदिर के अध्यक्ष श्री महावीर जैन, बड़तला दिगंबर जैन मंदिर के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र जैन ने किया।

अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा के अध्यक्ष श्री आर.सी. जैन साहब, अर्थमंत्री श्री अजीत जी जैन, पूर्व महामंत्री श्री अशोक जी जैन एंव केन्द्रीय कार्यकारिणी सदस्य श्री मुकेश जैन (अलीपुर) जयपुर का अलवर शाखा के अध्यक्ष श्री वी.के. जैन एवं समस्त कार्यकारिणी सदस्यों द्वारा सम्मान किया गया एवं शाखा अलवर के आगामी रुपरेखा पर परस्पर विचार विमर्श किया।

कार्यक्रम में अतिथि श्री योगेश जैन, श्री अनिल जैन, पार्षद श्री अरुण जैन, श्री मुकेश जैन, श्री सतीश जैन, पार्षद श्री विमल जैन, श्री पुनीत जैन, श्री मनीष जैन, श्री सुरेन्द्र जैन, श्री नीरज जैन, श्री राकेश जैन, श्री महेश जैन, श्री गोविंद जैन, श्री प्रमोद जैन व श्री रूपेश जैन आदि मौजूद रहे।

भूल सुधार

गत माह (दिसम्बर 2020) की श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका में पृष्ठ 13 पर स्व. श्री कुशलचन्द जी जैन की श्रद्धांजलि के विज्ञापन में श्रद्धावनत के कॉलम में त्रुटिवश निम्न नाम छपने से छूट गये थे-

स्वाति-श्रेयांस जैन *(पुत्री-दामाद)*
अलवर वाले
सम्भव, मान्या जैन *(नवासा, नवासी)*

बधाई

डॉ. धीरज जैन (निवासी अलवर) दिल्ली में एडिशनल कमिश्नर इनकम टैक्स होंगे। सीबीडीटी (केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड) की पदोन्नति सूची जारी की है। लक्ष्मणगढ़ तहसील के गांव हरसाणा निवासी डॉ. जैन को ज्वाइंट कमिश्नर से एडिशनल कमिश्नर के रूप में पदोन्नति दी गई है। वे 2008 बैच के आईआरएस अधिकारी हैं। अ.भा.प.जैन महासभा डॉ. जैन की इस उपलब्धि पर हार्दिक बधाई प्रेषित करती है।

ज़िन्दगी की टेंशन

एक व्यक्ति काफी दिनों से चिंतित चल रहा था जिसके कारण वह काफी चिड़चिड़ा तथा तनाव में रहने लगा था। वह इस बात से परेशान था कि घर के सारे खर्चे उसे ही उठाने पड़ते हैं, पूरे परिवार की जिम्मेदारी उसी के ऊपर है, किसी ना किसी रिश्तेदार का उसके यहाँ आना–जाना लगा ही रहता है...। इन्ही बातों को सोच–सोच कर वह काफी परेशान रहता था तथा बच्चों को अक्सर डांट देता था तथा अपनी पत्नी से भी ज्यादातर उसका किसी न किसी बात पर झगड़ा चलता रहता था।

एक दिन उसका बेटा उसके पास आया और बोला पिताजी मेरा स्कूल का होमवर्क करा दीजिये, वह व्यक्ति पहले से ही तनाव में था तो उसने बेटे को डांट कर भगा दिया लेकिन जब थोड़ी देर बाद उसका गुस्सा शांत हुआ तो वह बेटे के पास गया तो देखा कि बेटा सोया हुआ है और उसके हाथ में उसके होमवर्क की कॉपी है। उसने कॉपी लेकर देखी और जैसे ही उसने कॉपी नीचे रखनी चाही, उसकी नजर होमवर्क के टाइटल पर पड़ी।

होमवर्क का टाइटल था...

''वे चीजें जो हमें शुरू में अच्छी नहीं लगतीं लेकिन बाद में वे अच्छी ही होती हैं।''

इस टाइटल पर बच्चे को एक पैराग्राफ लिखना था जो उसने लिख लिया था। उत्सुकतावश उसने बच्चे का लिखा पढ़ना शुरू किया बच्चे ने लिखा था...

मैं अपने फाइनल एग्जाम को बहुत धन्यवाद देता हूँ क्योंकि शुरू में तो ये बिलकुल अच्छे नहीं लगते लेकिन इनके बाद स्कूल की छुट्टियाँ पड़ जाती हैं।

मैं ख़राब स्वाद वाली कड़वी दवाइयों को बहुत धन्यवाद देता हूँ क्योंकि शुरू में तो ये कड़वी लगती हैं लेकिन ये मुझे बीमारी से ठीक करती हैं।

मैं सुबह–सुबह जगाने वाली उस अलार्म घड़ी को बहुत धन्यवाद देता हूँ जो मुझे हर सुबह बताती है कि मैं जीवित हूँ।

मैं ईश्वर को भी बहुत धन्यवाद देता हूँ जिसने मुझे इतने अच्छे पिता दिए क्योंकि उनकी डांट मुझे शुरू में तो बहुत बुरी लगती है लेकिन वो मेरे लिए खिलौने लाते हैं, मुझे घुमाने ले जाते हैं और मुझे अच्छी–अच्छी चीजें खिलाते हैं और मुझे इस बात की खुशी है कि मेरे पास पिता हैं क्योंकि मेरे दोस्त सोहन के तो पिता ही नहीं हैं।

बच्चे का होमवर्क पढ़ने के बाद वह व्यक्ति जैसे अचानक नींद से जाग गया हो। उसकी सोच बदल सी गयी। बच्चे की लिखी बातें उसके दिमाग में बार–बार घूम रही थी। खासकर वह आखरी लाइन। उसकी नींद उड़ गयी थी। फिर वह व्यक्ति थोडा शांत होकर बैठा और उसने अपनी परेशानियों के बारे में सोचना शुरू किया...।

मुझे घर के सारे खर्चे उठाने पड़ते हैं, इसका मतलब है कि मेरे पास घर है और ईश्वर की कृपा से मैं उन लोगों से बेहतर स्थिति में हूँ जिनके पास घर नहीं है।

मुझे पूरे परिवार की जिम्मेदारी उठानी पड़ती है, इसका मतलब है कि मेरा परिवार है, बीवी बच्चे हैं और ईश्वर की कृपा से मैं उन लोगों से ज्यादा खुशनसीब हूँ जिनके पास परिवार नहीं हैं और वो दुनियाँ में बिल्कुल अकेले हैं।

मेरे यहाँ कोई ना कोई मित्र या रिश्तेदार आता–जाता रहता है, इसका मतलब है कि मेरी एक सामाजिक हैसियत है और मेरे पास मेरे सुख–दुःख में साथ देने वाले लोग हैं।

हे! मेरे भगवान! तेरा बहुत बहुत शुक्रिया....

मुझे माफ़ करना, मैं तेरी कृपा को पहचान नहीं पाया।

इसके बाद उसकी सोच एकदम से बदल गयी, उसकी सारी परेशानी, सारी चिंता एकदम से जैसे ख़त्म हो गयी। वह एकदम से बदल सा गया। वह भागकर अपने बेटे के पास गया और सोते हुए बेटे को गोद में उठाकर उसके माथे को चूमने लगा और अपने बेटे को तथा ईश्वर को धन्यवाद देने लगा।

हमारे सामने जो भी परेशानियाँ हैं, हम जब तक उनको नकारात्मक नज़रिये से देखते रहेंगे तब तक हम परेशानियों से घिरे रहेंगे लेकिन जैसे ही हम उन्हीं चीजों को, उन्ही परिस्तिथियों को सकारात्मक नज़रिये से देखेंगे, हमारी सोच एकदम से बदल जाएगी, हमारी सारी चिंताएं, सारी परेशानियाँ, सारे तनाव एकदम से ख़त्म हो जायेंगे और हमें मुश्किलों से निकलने के नए–नए रास्ते दिखाई देने लगेंगे। अगर आपको बात अच्छी लगे तो उसका अनुकरण करके जिन्दगी को खुशहाल बनाइये..!!

सदैव प्रसन्न रहें... कभी अपने लिए तो कभी अपनों के लिए...

संकलन : चन्द्रशेखर जैन
जयपुर

शोक संवेदना

श्रीमती लज्जावती जी जैन धर्मपत्नी स्व. श्री बंगालीमल जैन (भूतपूर्व अध्यक्ष, अ.भा.प. जैन महासभा शाखा, आगरा), लोहा मंडी आगरा का दिनांक 12 जनवरी 2021 को 90 वर्ष की आयु में आकस्मिक निधन हो गया। आपके पुत्र श्री मगन कुमार जैन अ.भा.प. जैन महासभा के पूर्व कोषाध्यक्ष रहे। श्रीमती लज्जावती जैन अत्यंत धार्मिक एवं सरल स्वभावी महिला थीं। अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा उनके आकस्मिक निधन पर भगवान महावीर स्वामी से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें और परिवारजनों को इस असहनीय दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

श्रीमती मायावती जी जैन धर्मपत्नी स्व. श्री सुगनचन्द जी जैन (जनकपुरी, दिल्ली) का दिनांक 12.1.2021 को स्वर्गवास हो गया है। श्रीमती मायावती जी अ.भा.प. जैन महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आर.सी. जैन (सेनि. आई.ए.एस.) की बड़ी बहन थीं। वे धार्मिक एवं सरल स्वभावी महिला थीं। अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा भगवान महावीर स्वामी से दिवंगत आत्मा की सद्गति की प्रार्थना करते हुए अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करती है।

श्रीमती कपूरी देवी जी जैन धर्मपत्नी श्री जयंती प्रसाद जैन, ठेकेदार धुलियागंज का स्वर्गवास दि. 09.01.2021 को हो गया है। श्रीमती कपूरी देवी जी धार्मिक एवं सरल स्वभावी महिला थीं। अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा भगवान महावीर स्वामी से दिवंगत आत्मा की सद्गति की प्रार्थना करते हुए अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करती है।

श्रीमती पदमा जी जैन धर्मपत्नी श्री प्रकाश चन्द जैन, डडवाड़ा, कोटा जंक्शन का स्वर्गवास हो गया है। श्रीमती पदमा जी बहुत सरल स्वभावी, मिलनसार व धार्मिक महिला, देव शास्त्र गुरु के प्रति श्रद्धा रखती थीं। अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा प्रभु से प्रार्थना करती है कि उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें तथा इनके परिवारजनों को इस गहन दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें। अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा भगवान महावीर स्वामी से दिवंगत आत्मा की सद्गति की प्रार्थना करते हुए अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करती है।

श्री भागचंद जी जैन (फलौदी क्वारी) तहसील खंडार, जिला सवाईमाधोपुर का दिनांक 19.01.2021 को स्वर्गवास हो गया है। श्री भागचंद जी मिलनसार, धार्मिक व सामाजिक कार्यों में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेते थे। अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा भगवान महावीर स्वामी से दिवंगत आत्मा की सद्गति की प्रार्थना करते हुए अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करती है।

श्रीमती रत्नमाला जी जैन धर्मपत्नी स्व. श्री ज्ञानचंद जी जैन (पूर्व सरपंच, नोगावां) का दिनांक 23.12.2020 को स्वर्गवास हो गया है। श्रीमती रत्नमाला जी धार्मिक एवं सरल स्वभावी महिला थीं। अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा भगवान महावीर स्वामी से दिवंगत आत्मा की सद्गति की प्रार्थना करते हुए अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करती है।

श्री सुभाष चन्द जी जैन (आगरा वाले), 69, शक्ति धाम, गिरधारीपुरा, वेस्ट गांधी पथ, जयपुर का स्वर्गवास 9.1.2021 को हो गया है। श्री सुभाष चन्द्र जी मिलनसार, धार्मिक व सामाजिक कार्यों में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेते थे। अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा भगवान महावीर स्वामी से दिवंगत आत्मा की सद्गति की प्रार्थना करते हुए अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करती है।

QUALITY WORKS • PROMPT SERVICE • COMPETITIVE RATES

PRODUCTS :
Transmission Line Towers (HT&LT), Telecom Towers, Wind Mill Structures, Sub-Station Structures, Lattice Structures, RSJ Poles & GI Earthing Strips.

FULLY EQUIPPED ULTRA MODERN FABRICATION AND GALVANIZING PLANT WITH EOT CRANES, HOISTS, POWER TROLLEYS, TESTING LABS & ETP SYSTEM TO ENSURE GREEN ENVIRONMENT

Fabrication & Galvanizing done as per IS, BIS, ASTM, DIN & ISO Standards
Bath Size : 9m (L) x 0.8m (W) x 1.4m (D)
Plant Capacity : 18000 Tons / Year

Vijay Transmission PVT. LTD.

Plant :
PNH No. 100, Village Kanhera, Block Dharsiva, Uria Acholi Marg, Dist. Raipur-492001
Tel.: (0771) 305 4900 • Fax : (0771) 232 3162

Corporate Office :
210, 211, 2nd Floor, Kamla Space, S.V. Road, Santacruz (West), Mumbai-400054
Tel.: 022-262183401 • Fax : +91-022-26609915
E-mail : info@vijaytransmission.com

प्रथम पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि

स्व. श्रीमती दयावती जी जैन

(धर्मपत्नी स्व. श्री केशरी नन्दन जैन)

(जन्मतिथि : 09.08.1935) **(पुण्यतिथि : 01.02.2020)**

हम सभी परिवारजन आपके उच्च विचारों व आदर्शों को
अपने जीवन में उतारने को सदैव प्रयासरत हैं
तथा आपको सदैव श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हैं।

श्रद्धावनत

पुत्र-पुत्रवधु :
दीपक जैन-विनीता जैन
आलोक जैन-पूनम जैन

पौत्रगण :
इंजि. पलाश जैन,
एड. दीक्षान्त जैन,
नमन जैन, यश जैन

In Loving Memory of

Late Sh. Shyamlal Ji Jain & Late Smt. Jaidevi Ji Jain

Raj Kumar Jain - Sushila Jain
(Son & Daughter in Law)
Vikas Jain - Babita Jain
Vipin Jain - Ritu Jain
(Grand Son & Grand Daughter in Law)
Abhilasha Salecha - Nitin Salecha
Manisha Jain - Sanjeev Jain
(Grand Daughter & Grand Son in Law)

JAPAN KARATE-DO NOBUKAWA-HA SHITO-RYU KAI INDIA

UNIT-RAJASTHAN

LEARN

KARATE CLASSES

1. Self Defence Course.
2. Black-Belt Training Programme.
3. Yoga Training For Karate Students.
4. Organise District, State, National, International Championships & Training Programme.

FRENCH CLASSES

1. Prepare For Basic French Language.
2. Prepare For Delf Exam. (Conduct by Allaince De Français)

CONTACT :

Vipin Jain
3rd Dan Black Belt
Chief Karate Instructor of Rajasthan & West India Coordinator
9829180895
www.karatedorajasthan.com

Firm :

Jain Packing Materials

(Traders of Packing Materials & Machines)
46, Royal Complex, Medical Market, Near Railway Station, Ajmer (Raj.)

Residential Address :
464, "Shyam Sadan", Near Palliwal Digamber Jain Temple, Pal Bichla, Ajmer

// श्री महावीराय नमः //

ॐ नमः

द्वितीय पुण्यतिथि पर भावभीनी श्रद्धांजलि

जन्म दिनांक
31.10.1944

निधन
28.01.2019

स्व.श्री सुदर्शन बनवारीलालजी जैन

हम सभी परिवारीजन आपको स्मरण करते हुए श्रद्धापूर्वक नमन करते हैं।

पुत्र–पुत्रवधू
कपिल–स्मिता जैन
सचिन–आभा जैन

धर्मपत्नी
श्रीमती कमलेश जैन

पौत्र–पौत्री
शान्तनु, काव्या, अनन्या

अनुज–अनुजवधू
राजेन्द्र–विजया जैन

बहन
मीना पुरीवाला

निवास

APEX MARKETING
13/4, साउथ तुकोगंज, बैंक ऑफ इंडिया कॉलोनी, इन्दौर
मोबा : 9826051296, 9826951296, 9920027883

वैवाहिकी

सूचना

1. पत्रिका में प्रकाशित वर/वधू की तलाश के अंतर्गत विवरण की सत्यता से सम्पादक अथवा पत्रिका का किसी भी प्रकार का दायित्व नहीं हैं। वर/वधू दोनों पक्ष पूर्ण जानकारी अपने स्तर से करने के बाद ही संबंध स्थापित करें।
2. पात्रों के विवरण में आयु के स्थान पर जन्मतिथि तथा आय चार/पांच अंको में, के स्थान पर वास्तविक आय लिखें।

नोट : प्रकाशन योग्य सामग्री एवं संबंध होने की सूचना पत्रिका संयोजक को प्रषित करें जिससे आगामी अंक में विज्ञापन का प्रकाशन किया जाये या न किया जाये।

वर की तलाश

★ **मिल्की जैन** सुपुत्री श्री पारस चंद्र जैन, जन्मतिथि 15.04.1993 (सायं 7:35), कद 5'–3'', शिक्षा– एम.बी.ए., गोत्र : स्वयं– बंजारा, मामा– डंगया, सम्पर्क : 1178 बी–ब्लॉक, आनंद नगर, ग्वालियर, मो.: 9425128745, 9425772444 *(दिसम्बर)*

★ **Neha Jain** D/o Sh. Nirmal Kumar Jain, DoB 10.10.1994 (at 04:15 am, Abu Road), Education- B.Tech.(EC), M.Tech. (persuing), Gotra : Self- Januthariya, Mama- Ved Vairashtak, Contact : 274, Gandhi Nagar, Abu Road (Raj.), Mob.: 9929303643, 9413847566 *(Nov.)*

★ **Neha Jain** (Manglik) D/o Sh. Manoj Kumar Jain, DoB 24.05.1994 (at 06:55 am, Laxmangarh, Alwar), Height- 5ft., Fair Complexion, Education- B.Tech (CSE), Jyoti Vidyapeeth Womens University, Jaipur, Professional Info Designation- Deputy Manager at Reliance Jio, Gotra : Self- Chaurbambar, Mama- Athvarsiya, Contact : Near Jain Temple, Main Market Road, Laxmangarh, Alwar, Mob.: 9414906441 *(Nov.)*

★ **Deeksha Jain** D/o Sh. Rakesh Kumar Jain, DoB 07.08.1993 (at 10:15 am, Agra), Height- 5'-4", Education- B.Com., M.B.A., Job- Analyst in E.Y. Noida, Income- 5 LPa, Gotra : Self- Badaria, Mama- Chorbambar, Contact : 325, Jaipur House, Agra-02, Mob.: 9997039641, Ph.: 0562-4031148 *(Nov.)*

★ **Ananta Jain** D/o Sh. Suresh Chand Jain, DoB 23.09.1991 (at 4:25am, Agra), Height- 5'-6", Education- B.Tech in ME from BIET Jhansi & M.Tech in ME from IIT Jodhpur, Gotra : Self- Salavadiya, Mama- Khair, Contact : 181-A, Second Floor, Panchvati Parsvnath, Fatehabad Road, Agra, Mob.: 9549995511, Email : jainanant@indianoil.in *(Nov.)*

★ **Shaina Jain** (Maanglik) (Divorcee) D/o Sh. Shital Prasad Jain, DoB 11.03.1992 (at 6:22 am, Alwar), Height 5'-4", Education- BBA, MBA, PGDCA, Job- Working at HDFC Bank, New Delhi, Gotra : Sangarwasia, Contact : Raj Nagar Part-2, Palam Colony, New Delhi, Mob.: 9354830171, 9560649574, 9899076686 *(Dec.)*

★ **Sonakshi Jain** D/o Sh. Yogesh Kumar Jain, DoB 27.03.1993 (at 07:04 AM, Agra), Height- 5'-4", Education- B.Tech. in Electrical and Electronics from Shiv Nadar University and MBA in Finance from USMS, Currently Working with Tata Power Delhi Distribution Limited as an Asst. Manager, Package 9.3 LPA, Gotra : Self- Baderia, Mama- Chaudhhary, Contact : 7060928794, 9634081372 *(Dec.)*

★ **Nitasha Jain** D/o Sh. Rajesh Kumar Jain, DoB 05.07.1993 (at 01:45 AM, Shivpuri), Height- 5'-4", Education- B.Com., MBA, Currently Working at Tata Consultancy Services as Process Enabler, Gotra : Rajoriya, Contact : 9425765937, 9993978225, 9926689177, 8823882162 *(Dec.)*

★ **Akansha Jain** D/o Sh. Sunil Kumar Jain, DoB 16.11.1991 (at 2:57 pm, Agra), Height 5'-1", Education- B.Com., C.A. (Inter), CAIIB, Occupation- Asstt. Manager in Union Bank, Mumbai, Gotra : Self- Athavarsiya, Mama- Baderiya, Probelem- Thalassmia, Contact : B-408, Harshvardhan Aptt. Raheja Township Malad (E), Mumbai, Mob.: 9867778868, 7039681603 *(Dec.)*

★ **Kavya Jain** D/o Late Sh. Harish Chand Jain, DoB 16.03.1995 (at 11:45 AM, Agra), Height- 5ft., Education- B.Sc. & M.Sc. (Math), Gotra : Self- Rajoriya, Mama- Birtdriya, Contact : Sh. Yatendra Jain (Brother), 56, Ramjeet Nagar, Albatiya Road, Shahganj, Agra, Mob.: 7017625374 *(Dec.)*

★ **CA Parul Jain** D/o Sh. Mahaveer Jain, DoB 26.09.1995 (at 1:14 AM, Mandawar), Height- 5'-2", Education- B.Com, M.Com (Gold Medalist), CA, NET Qualified, Gotra : Self- Chauebambar, Mama- Ambia, Contact : Sh. Mahaveer Jain, 10, Bodan Colony, Jaipur Road, Alwar, Mob.: 8094509540, Email ca.parul26@gmail.com *(Dec.)*

★ **Arpita Jain** D/o Sh. Gopal Jain, DoB 25.06.1991 (at 10:35 am, Jaipur), Fair Complexion, Height 5'-2", Gotra : Self- Bhamariya, Mama- Bharkolia, Education- M.Sc. Chemistry MNIT College, Jaipur & B.Ed., Working as Self Employed Teaching Running Coaching Classes, Contact : 432, Rajni Vihar, Aimer Road, Jaipur-302024, Ph.: 0141-2354378, Mob.: 9413042927, 9460474389 *(Jan.)*

★ **Pinky Jain** D/o Sh. Anil Kumar Jain, DoB 26.10.1995 (at 5:30 PM), Height 5'-2", Education- B.Com., Gotra : Self- Banjare, Mama- Jantiera, Contact : Station Road, Banmore, Morena, Mob.: 9977196503, 8839359923 *(Jan.)*

★ **Priyanshi Jain** (Manglik) D/o Sh. Satish Chand Jain, DoB 01.11.1994 (at 12:20 pm, Gwalior), Height 5'-3", Education- MBA (Business Anatytics &

Operations) from IIIT Gwalior, BE (CS) from ITM Gwalior, Working at Axtria India Pvt. Ltd. Gurgaon (12 LPA), Gotra : Self- Bariwar, Mama- Sangarwasiya, Contact : Sursh Chand Satish Chand Jain, C/o Banshidhar Suresh Chand Jain, Lohiya Bazar, Lashkar, Gwalior, Mob.: 9425753451, 9425109863, 8989474692, Email : jain.palash1992@gmail.com *(Jan.)*

★ **Priya Jain** D/o Sh. Anil Jain, DoB 26.02.1996, Height 5'-2", Fair Color, Education- B.Sc., Diploma in Accounting, Gotra : Self- Chandpuria, Mama- Lohkarodiya, Contact : B-33, Janakpuri, New Sahaganj, Agra, Mob.: 9897012342 *(Jan.)*

★ **Deepali Jain** (Manglik) D/o Sh. Ajeet Kumar Jain, DoB 31.10.1992 (at 11:48 pm, Hindaun City), Height 5'-1", Education- M.Tech (EC), Job- A.M. (ICICI Bank, Hindaun City), Gotra : Self- Badvasia, Mama- Nangesuriya, Contact : Opp. Chandra Sr. Sec. School, Mohan Nagar, Hindaun City, Dist. Karauli, Mob.: 9414400922, 9079205098 *(Jan.)*

★ **Shailly Jain** D/o Late Sh. A.K. Jain, DoB 25.08.1993 (at 12:22 pm, Varodara, Gujarat), Height 4'-9", Education- PGDBA in Finance, Gotra : Self- Kotiya, Mama- Banjara, Contact : Sh. R.K. Jain, C-13, Pratik Enclave, Kamla Nagar, Agra, Mob.: 9917474357, Email : rajendr1959@gmail.com *(Jan.)*

वधू की तलाश

कृपया दहेज लोभी पत्रिका में प्रकाशनार्थ विज्ञापन न भेजें

★ **अंकुश जैन** पुत्र श्री अजीत कुमार जैन, जन्मतिथि 26 जून 1994 (प्रातः 3:07 बजे), कद– 5'–5'', शिक्षा– बी.टेक (मैकेनिकल), जॉब– कैशियर (सेन्ट्रल बैंक ऑफ इन्डिया), गोत्र : स्वयं– लैदोडिया, मामा– बडवासिया, सम्पर्कः जैन कॉलोनी, खेरली, अलवर, मो.: 9461247544, 9887787705 *(नवम्बर)*

★ **मोहित जैन** पुत्र श्री नरेंद्र कुमार जैन, जन्मतिथि 16.12.1992 (प्रातः 07:40 बजे, रावतभाटा, कोटा), शिक्षा–बी.टेक., एम.बी.ए. (फाइनेन्स), कार्यरत– जेनपेक्ट जयपुर, गोत्र : स्वयं– आमेश्वरी, मामा– माईमुण्डा, सम्पर्क : 9352243036, 9414668603 *(दिसम्बर)*

★ **प्रखर जैन** (मांगलिक) सुपुत्र श्री मनोज कुमार जैन, जन्मतिथि 19.02.1994 (प्रातः 00:35), कद 5'–8'', शिक्षा– बी.बी.ए., एम.बी.ए. मार्केटिंग, व्यवसाय– ट्रवलिंग एण्ड ट्यूर्स, आय– 15 लाख प्रति वर्ष, गोत्र : स्वयं– जनुथरिया, मामा– मालेश्वरी, सम्पर्क : डी–127, फर्स्ट फ्लोर, झिलमिल कॉलोनी, नई दिल्ली, मो.: 9810009822, 9910009822, ईमेल : prakhar@travelvoyagers.com *(दिसम्बर)*

★ **दीपक जैन** पुत्र श्री सुनील कुमार जैन जन्मतिथि 20.04.1993 (प्रातः 9:20), कद 5'–7'', शिक्षा बी.ई. (आई.टी), जॉब– हॉटस्टार, बैंगलोर, गोत्र : स्वयं– बोहरंगडंगिया (पल्लीवाल), मामा– चांदपुरिया, संपर्क : फ्लैट नंबर 302, श्री हाइट्स अपार्टमेंट, बिहाइंड काशीनाथ लॉज, जलगांव, महाराष्ट्र, मोबाईल : 9423490351, 8421425100 *(जनवरी)*

★ **शुभम जैन** पुत्र स्व. श्री राजेश कुमार जैन, जन्मतिथि 13.07.1994, कद– 5'–11'', शिक्षा– बी.कॉम, एमबीए, अम्बुजा सीमेन्ट में क्षेत्रीय विक्रय अधिकारी के पद पर कार्यरत, गोत्र : स्वयं– जनुथरिया, मामा– बडवासिया, सम्पर्कः 9529397529 *(जनवरी)*

★ **Sumit Jain** S/o Sh. Lochan Das Jain, DoB 05.06.1991 (at 7:30 pm, Morena), Height 5'-9", Education- BE (Mech.) from IET (Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore), Occupation- Auditor in Ministry of Defence (Finance), Package 7 LPA, Gotra : Self- Baribar, Mama- Kashmiria, Contact : Near K.S. Mill Nainagarh Road Morena (M.P), Mob.: 8463022852, 9755284934 *(Nov.)*

★ **Shashank Jain** (Mangalik) S/o Sh. Anil Kumar Jain Bajaj, DoB 21.021992 (at 6:30 am, Agra), Height- 5'-7", Education- MCA, Job- Working in Iskpro Ltd. Noida as a Senior Software Tester, Gotra : Self- Ladodiya, Mama- Rajeshwari, Contact : C-153, Subhash Nagar, Kamla Nagar, Agra-282005, Mob.: 9634074088, 9927463181, Email : aniljainbajaj@gmail.com *(Nov.)*

★ **Abhinav Jain** S/o Sh. Vijay Kumar Jain, DoB 22.12.1994 (at 7:53 am, Agra), Education- B.Sc., Job- Assistant Manager in Aryavart Bank, Height- 5'-6", Gotra : Self- Salavadia, Mama- Kotia, Contact : Balaji Puram, Shahganj, Agra (U.P.), Mob.: 9319213080 *(Nov.)*

★ **Ayush Jain** S/o Dr. S.C. Jain, DoB 04.01.1993 (at 10:25 pm, Delhi), Height 5'-9", Education- B.E. (ECE), ITM Gurgaon University, Job- Telecom Engineer, Orange Business Services Gurugram, Income- 7.5 LPA, Gotra : Self- Sangeswari, Mama- Kotia, Contact : 1188, Sec. 15, Part 2, Gurgaon, Mob.: 9810180183, 8826267521 *(Nov.)*

★ **Vivek Jain** S/o Sh. Mahavir Prasad Jain, DoB 22.08.1992 (8:00AM, Joura), Height- 5'-8", Education- M.Tech (IIT Kharagpur), Job- Govt. Engg. in National Fertilizers Limited (Ramagundam), Income- 12 LPA, Gotra : Self- Mahila, Mama- Lohekadere, Contact : 9179536566, 6239737587 *(Nov.)*

★ **Aditya Jain** S/o Sh. Uttam Jain, DoB 12.10.1990 (at 11:20 pm, Alwar), Height- 5'-6", Education- B.Tech (ECE), M.Tech. (Pursuing from BITS Pilani), Occupation- Senior Software Engineer Accenture - Gurgaon, Package 10 LPA, Gotra : Self- Kashmeria, Mama- Choudhary, Contact : Janakpuri-II, Imli Phatak, Jaipur, Mob.: 9414405532 *(Nov.)*

★ **Anirudh Jain** S/o Sh. Sanjay Kumar Jain, DoB 08.01.1995 (at 5:38 PM), Height 5'-8", Education- BA, LLB, CS, Business- Director at S.K. Law and Company, Vishwakarma Complex, Agra (UP), Gotra : Self- Barbasiya, Mama- Varivar, Contact : 96, Jain Nagar Khera, Firozabad, Mob.: 9412265526, 9756600526, Email : anirudh.sklaw@gmail.com *(Nov.)*

★ **Abhinav Jain** S/o Sh. Abhinandan Jain, DoB 24.02.1993 (at 11:53 pm, Alwar), Height 5'-9", Education- B.Com. (Rajasthan University), Accounting Software- Tally & Busy, Preparing for Govt. Examination, Job Profile: Marketing Supervisor at Deepak India Pvt. Ltd., MIA Alwar, Gotra : Self- Ameshwari, Mama- Salavdiya, Contact : Opp. Geeta Press, Shikari Para, Munshi Bazar, Alwar, Mob.: 9414811460, 9079625770 *(Nov.)*

★ **Mehul Jain** S/o Sh. Ashok Jain, DoB 31.07.1995 (at Jaipur), Education- B.Tech (Computer Science) SRM University Chennai, Occupation- System Engineer at Infrrd, Bengaluru, Gotra : Maimuda, Contact : 658, Mahaveer Nagar-I, Landmark Pooja Tower, Gopalpura Bypass, Jaipur, Mob.: 9928070403 *(Nov.)*

★ **Rohit Jain** S/o Sh.Gyanchand Jain, DoB 28.11.1994 (at 7:00 am, Bharatpur),Height- 5'-6", Fair Complexion, Education- B.Tech (NIT Kurukshetra), Job- Software Engineer (Accenture), Gotra : Self- Khair, Mama- Salawadia, Contact : K.C. Sharma Gali, Near Pratap Sarpanch, Neem Da Gate, Bharatpur-321001, Mob.: 9460737358, 9896009921, Email : rohitsonu33@gmail.com *(Nov.)*

★ **Rahul Jain** S/o Late Sh. Daya Chand Jain (Fateh Chand Jain), DoB 11.07.1993 (at 07:25 am, Harsana- Laxmangarh, Alwar), Height- 5'-11", Education- M.Com, CA (Final), MBA (Pursuing), Occupation- Office Assistant at Rajasthan Marudhara Gramin Bank, Gotra : Self- Kotiya, Mama- Bhordhangiya, Contact : 5/52, N.E.B Housing Board, Behind Krishi Upaj Mandi, Alwar, Mob.: 9414334467, 9875114063, Email : rtmjain@gmail.com *(Nov.)*

★ **Kushal Jain** S/o Sh. Vinod Kumar Jain, DoB 23.12.1991 (at 7:50 am), Height 5'-8", Education- B.Tech in Information Technology (Hindustan Institute of Technology & Management), Agra, Job- Lead Assistant Manager at EXL Service Pvt Ltd., Oxygen Park, Sector 144, Noida, Gotra : Self- Kotia, Mama- Garg, Contact : 29, Prem Anand Kunj, Brij Bihar Colony, Kamla Nagar, Agra, Mob.: 9897717596, 6395524546, 9528032733, Email : vinodkumarjainagra@gmail.com, kushal.jain63@gmail.com *(Nov.)*

★ **Shrayansh Jain** S/o Late Sh. Sunil Jain, DoB 06.01.1994 (at 11:15 am, Kherli Ganj, Distt. Alwar), Education- Bachelor in Computers Application, Occupation- Junior Assistant Board of Revenue Raj. Ajmer, Gotra : Self- Nagaswaria, Mama- Chodbambar, Contact : Sunil Jain, Kiran Villa, Near Mathur Bhatta, Topdara, Ajmer.(Raj.), Mob.: 9413781308 (Sushil Jain), 9460355313 (Satish Jain) *(Nov.)*

★ **Shiv Jain** S/o Late Sh. Tota Ram Jain, DoB 06.07.1993 (at 12:35 am, Joura), Height 5'-5", Education 10th, Occupation- Shiv Iron Store (Manufacturing), Income 5 to 7 LPA, Gotra : Mahila, Mob.: 7509684399, 8652006887, 7000711623 *(Nov.)*

★ **Sparsh Jain**, DoB 16.08.1991 (at 4:30pm, Kherli), Height- 5'-4", Education- M.Com & Company Secretary, Job- Company Secretary & Compliance Officer working in M/s. Dhabriya Polywood Ltd., Malviya Industrial Area, Jaipur, Gotra : Self- Kotiya, Mama- Dhati, Contact : S.K. Jain, B-48, Vidhya Nagar, Jagatpura, Jaipur, Mob.: 96602 55730, 78773 26965 *(Dec.)*

★ **Prayansh Jain** S/o Sh. Prakash Chand Jain, DoB 27.02.1994 (at 8:10 PM, Alwar), Height- 5'-8", Education- B.Tech (JECRC Jaipur), Occupation- Software Engineer in Infosys Ltd., Chandigarh, Package- 4.5 LPA, Gotra : Self- Nageshwaria, Mama- Badwasia, Contact : Sh. Prakash Chand Jain, Jain Tyres, 9, Bapu Bazar, Alwar, Mob.: 9829215414 *(Dec.)*

★ **Kapil Kumar Jain** (Sonu) S/o Sh. Dinesh Chand Jain, DoB 12.12.1993 (at 11:30 am, Jaipur), Height- 5'-5", Education- Polytechnic Diploma (Mechanical Engineering + Graduate in B. A and Computer Diploma), Occupation- Working in Hevalls India Pvt. Ltd. in Alwar, Income 2.40 LPA, Gotra : Self- Kher, Mama- Nangesariya, Contact : 245, Shiv Colony, Mehandipur Balaji (Dausa), Mob.: 8955011011, 9829428416, 9784761984 *(Dec.)*

★ **Abhiyank Jain** S/o Sh. Rajesh Jain, DoB 14.11.1989, Height- 5'-8", Education- RedHat Certified System Engineer and Administratior, Cisco Certified Network Associate (USA), Occupation- Working as Technical Support Engineer at Motisons Jewellers, Jaipur, Income- 4 LPA, Gotra : Self- Ledoriya, Mama- Chandpuriya, Contact : Sh. Swaroop Chand Jain, 962, Kissan Marg, Barkat Nagar, Tonk Phatak, Jaipur, Mob.: 9351537837 (Rajesh Jain) *(Dec.)*

★ **Alankrit Jain** S/o Sh. Jagdish Prasad Jain, DoB 04.08.1990 (at 03:12 PM, Agra), Height 5'-11", Education B.Com., Occupation- Own Business (Trading of Imported Tin Plate Sheets & Manufacturing of Tin Factory Product), Income- 8 to 10 LPA, Gotra : Self- Salavadia, Mama- Deveriya, Contact : J.P. Jain, F-823/6, Kamla Nagar, AGRA, Mob.: 9412261738, Email : atc1987@rediffmail.com *(Dec.)*

★ **Mohit Jain** S/o Sh. N.K. Jain, DoB 16.12.1992 (at 7.40 AM, Rawatbhata), Education- B.Tech., MBA (Finance), Working- Process Developer Genpact IT Company, Jaipur, Gotra : Self- Ameshwari, Mama- Mymunda, Contact : N.K. Jain, Mob.: 9414668603 *(Dec.)*

★ **Siddharth Jain** S/o Sh. Babu Lal Jain, DoB

24.05.1992 (at 08:00 PM, Agra), Height- 5'-7", Education- B.Tech from Ramswaroop College, Lucknow, Job- Officer in Canara Bank, Gandhinagar, Gujarat, Gotra :Self- Kotiya, Mama- Deveriya, Contact : 13, Indra Colony, Shahganj, Agra-282010, Mob.: 9897848561 *(Dec.)*

★ **Mohit Jain** S/o Sh. Anoop Chand Jain, DoB 20.06.1986 (at Agra), Height- 6Ft., Education- M.Com., MBA, Profession- Business (Oil Mill Machine & Machinery Parts), Gotra : Self- Chaurbambar, Mama- Badwasiya, Contact : 68, Near Jeevan Jyoti Hospital, Avash Vikash Colony, Sector-1, Bodla, Agra-282007, Mob.: 9412261831, 9870978410 *(Dec.)*

★ **Manish Jain** S/o Sh. Umesh Chand Jain (Kante wale), DoB 08.03.1994 (at 4:40 AM, Gwalior), Height- 5'-8", Color Fair, Education- B.Tech. (Mechanical Engineer) NIT Bhopal, Occupation- Iron Business, Gotra : Self- Chorbumbar, Mama- Salavadia, Contact : Sh. Kushal Chand Kailash Chand Jain (Kante wale), (N.R. Industries), Lohiya Bazar, Lashkar, Gwalior, Mob.: 9893016050 *(Dec.)*

★ **Ashish Jain** S/o Late Sh. Pawan Kumar Jain, DoB 01.04.1990 (at 1:55 PM, Kota), Height- 5'-5.5", Education- B.Tech. (Civil), Occupation- Project Engineer in a renowned Construction Co. at Daman, Income 7.30 LPA, Gotra : Self- Chaurbambar, Mama- Kathumaria, Contact : 36, Basant Vihar Special, Behind Modi College, Kota-324009, Mob.: 9829242662, 7742736669, Email : pawankumar jain56@yahoo.com, pawan42662@gmail.com *(Dec.)*

★ **Abhishek Jain** S/o Sh. Mahesh Chand Jain, DoB 08.11.1988 (at 11:17 pm, Jaipur), Height- 5'-11",Education- B.Com, M.Com (ABST), MBA (Finance), CA Final (Pursing), Occupation- Working as Credit Manager in AU Small Finance Bank Ltd., Jaipur, Income 5.50 LPA, Gotra : Self- Baroliya, Mama- Sangarwasi, Contact : B-262 Hari Marg, Malviya Nagar, Jaipur-302017, Mob.: 9414044422, 9414775486, Email : maheshjn8@gmail.com *(Dec.)*

★ **Anshul Jain** S/o Sh. Pushpendra Jain, DoB 14.03.1994 (at 9:12 am, Agra), Height- 5'-11", Education- B.Com., Profession- Business, Gotra : Self- Salawadia, Mama- Maimuda, Contact : Jain Readymade and Book Store, Midhakur (Agra), Mob.: 9410006648, 8445463430 *(Dec.)*

★ **Rahul Jain** S/o Sh. S.C. Jain, DoB 29.01.1981 (at 10:20 am, Agra), Height 5'-9", Education- Graduate, LLB., Occupation- Lawyer, Practice in Civil Court, Agra & Panel Advocate of Banks, Income- Approx. 30,000 per month, Gotra : Self- Chorbambar, Mama- Javeria, Contact : 18/260, Munni Bhawan, Maithan, Agra-282003, Mob.: 9319821191, 8979247501, Ph.: 0562-2620070 *(Dec.)*

★ **Ajeet Kumar Jain** S/o Late Sh. Ramesh Chand Jain, DoB 03.11.1990, Height 5'-8", Education- M.Sc., B.Ed., Working as 2nd Grade Science Teacher at Govt. Senior Secondary School at Mahwa Block, District Dausa, Gotra : Self- Kotiya, Mama- Bhadkolia, Preferably Govt. Employee, Contact : Dr. Ashok Jain, Jain Hospital Mahwa, 9414079829 *(Jan.)*

★ **Anurag Jain** S/o Sh. M.K. Jain, DoB 4.5.1992 (at 1:25 night, Gwalioar), Height 5'-6", Education B.Com, M.A. (Economics), C.A. final (2nd group) pursuing, Occupation- Chartet Firm, Gotra : Self- Nihoniya, Mama- Chauebambar, Contact : Sh. M.K. Jain, Gwalior, Mob.: 9425336641, 9425726333 *(Jan.)*

★ **Sajal Jain** S/o Sh. Adiraj Jain, DoB 03.02.1990 (at 4:15 AM, Aligarh), Height- 5'-7", Education- C.S. (Company Secretary), L.L.B, B.Com (Hons.), Occupation- Professional, Practicing Company Secretary at Rajouri Garden, New Delhi-110027, Income- 8.5 LPA, Gotra : Self- Kalonia (Palliwal Jain), Mama- Garg, Contact : 9/6A, Jain Street, Modi Khana, Aligarh, Uttar Pardesh-202001, Mob.: 91-9873297097, Email : jain.adiraj@gmail.com *(Jan.)*

★ **Gaurav Jain** S/o Sh. Dinesh Kumar Jain, DoB 03.09.1986 (at 2:30 am, Kapren Distt. Bundi), Height 5'-7", Education- MA, Occupation- Stock Market Jaipur, Income- 6 lakh+, Gotra : Self- Bhattarai, Mama- Barolia, Contact : P.No. 34, Silver Moon Residency, Krishna Sagar Dholai, Near Jain Mandir, Muhana Road, Mansarovar, Jaipur-302020, Mob.: 6375025680 *(Jan.)*

★ **Jitendra Jain S/o Sh. Dinesh Kumar Jain,** DoB 17.01.1992 (at 1:30 PM, Kapren Distt. Bundi), Height 5'-6", Education- M.Com, Occupation- Accountant, Income- 5 Lakh+, Gotra : Self- Bhattarai, Mama- Barolia, Contact : P.No. 34, Silver Moon Residency, Krishna Sagar Dholai, Near Jain Mandir, Muhana Road, Mansarovar, Jaipur-302020, Mob.: 6375025680 *(Jan.)*

★ **Lucky Jain** S/o Sh. Dinesh Kumar Jain, DoB 08.07.1989 (at 5:20 am, Sawai Madhopur), Height 5'-4", Education- M.A., Occupation- LIC Adviser & Accountant, Jaipur. Income- 6 lakh+, Gotra : Self- Bhattarai, Mama- Barolia, Contact : P.No. 34, Silver Moon Residency, Krishna Sagar Dholai, Near Jain Mandir, Muhana Road, Mansarovar, Jaipur-302020, Mob.: 6375025680 *(Jan.)*

★ **Vinit Kumar Jain** S/o Sh. Rajendra Prasad Jain, DoB 17.07.1989 (at 8:25 PM, Bharatpur), Height- 5'-9", Education- B.Tech in Mechanical Engineering, Occupation- Assistant Manager (Engg.) in Rajasthan Cooperative Dairy Federation (Cattle feed Plant) Nadbai, Bharatpur, Gotra : Self- Ladodia, Mama- Athvarsia, Contact : Plot No. B-14, Ranjeet Nagar, Near Jain Temple, Bharatpur, Mob.: 9413444164, 9414348915 *(Jan.)*

★ **Ankur Jain** (Manglik) S/o Sh. Ramesh Chand Jain, DoB 31.07.1989 (6:50 pm, Agra), Height 5'-9", Education Diploma in Auto Eng., M.Sc. (Phy. 1st Div.), B.Ed., Occupation- Sr. Executive Technical Surveyor, General Insurance, Income- 4 LPA, Gotra : Self- Chaurbambar, Mama- Sengarwasia, Mob.: 9045216301, 9258065928 *(Jan.)*

★ **Abhishek Jain** S/o Sh. Ramesh Chand Jain, DoB

18.08.1990, Height 5'-10", Education- MBA Marketing & HR, Occupation- Canara Bank Housing Finance Agra, Income- 30,000/- Per Month, Gotra : Self- Chaurbambar, Mama- Sengarwasia, Mob.: 9045216301 9258065928 *(Jan.)*

★ **Nilesh Jain** S/o Sh. Rajendra Kumar Jain, DoB 30.06.1985 (at.1:22 pm, Ajmer), Height- 5'-8", Education- M.Com, MBA, Occupation- Working as a State Head at Manba Finance Ltd. Co. Jaipur Income- 10.50 LPA, Gotra : Self- Maimunda, Mama- Chorbambar, Contact : 11/40, Kaveri Path, Mansarover, Jaipur, Mob.: 9983444198 (W), 9829818894 *(Jan.)*

★ **Vivek Jain** S/o Late Sh. Vinod Kumar Jain, DoB 27.08.1993 (at 05:55pm, Mandawar), Height- 5'-5", Education- B.Com., Owner of Wholesale Business at Jaipur, Earning more than 6 digits p.m., Gotra : Self- Kotiya, Mama- Sangarvasiya, Contact : 78/71, Arawali Marg, Mansarovar, Jaipur, Mob.: 9414067972, 7425867972 *(Jan.)*

★ **Ravi Jain** S/o Anil Kumar Jain, DoB 20.09.1993 (at 9:20 am), Height 5'-7", Education- B.Com., Business- Ravi Electronic Station Road, Banmor, Neeraj Electronics Finting Material, Gotra : Self- Banjare, Mama- Jantria, Mob.: 9977196503, 8839359923 *(Jan.)*

★ **Akant Jain** S/o Sh. Suresh Chand Jain, DoB 13.11.1989 (at 8:02 PM, Alwar), Height- 5'-7", Education- B.Tech in Electronics and Communication Engineering and MBA in Marketing and Finance, Working with Stonify Surfaces Pvt. Ltd., Jaipur as Business Development Manager, Package- 7 LPA, Gotras : Self- Rajeshwari, Mama- Maleshwari, Contact : Sh. Suresh Chand Jain, Jain Bhawan, Gali No. 11, Mohalla Darukutta, Road No. 2, Near Kashi Ram Circle, Alwar-301001, Mob.: 9414641566, Ph.: 0144-2345479, Email- prateek_liet1@yahoo.com *(Jan.)*

★ **Deepesh Jain** S/o Sh. Kailash Chand Jain (SBI), DoB 02.06.1994 (at 11:40 PM, Kherli Alwar) Height 5'-9", Education- B.Tech., CSE, Job- Software Development Engineer-2 at Amazon, Bangalore, Gotra : Self- Baderia, Mama- Chaudbambar, Contact : 262/196, Pratap Nagar, Sanaganer, Jaipur, Mob.: 9001896028, 7665841000 *(Jan.)*

★ **Divyanshu Jain** S/o Sh. Prabhash Chand Jain, DoB 03.07.1992 (at 12:12 PM, Jaipur), Height 5'-6", Education- B.Tech (Mechanical) from MNIT, Jaipur, Occupation- Consultant, in ZS at Gurgaon, Package- 22 LPA, Gotra : Self- Pavatiya, Mama- Vairashtak, Contact : 691, 2nd Floor, Rani Sati Nagar, Janpath, Gate No. 09, Jaipur, Mob.: 9828274035, Email : prabhashjain5@gmail.com *(Jan.)*

★ **Bhupesh Kumar Jain** S/o Sh. Vimal Chand Jain, DoB 17.09.1991 (at 4:55 am, Alwar), Height 178 cm., Education- B.Tech (ECE), RS-CIT, Job- Junior Associate SBI Bank Bhavnagar Gujarat, Gotra : Self- Mastang Dangiya Chaudhary, Mama- Baroliya, Contact : VPO Barodakan (Laxmangarh), Distt. Alwar-321607, Mob.: 9413585389, 9079754722 *(Jan.)*

★ **Shashank Jain** S/o Sh. Vimal Chand Jain, DoB 11.04.1993 (at 9:00 am, Joura), Height 5'-9", Education- B.Sc. Mathematics, PG Diploma in Tourism & Marketing (MBA), Occupation- Co-founder & Director at Courage Hospitality Pvt. Ltd., Partner at Travel Googly.com, Gotra : Self- Lokarere, Mama- Kher, Contact : 343/129, Shitla Gali, Abroad, Mob.: 8602504552, Email : sjain0764@gmail.com *(Jan.)*

★ **Ronak Suresh Jain** S/o Sh. Suresh Chand Dhannalal Jain, DoB 25.01.1994, Height 5'-8", Fair Complexion, Education- MBA in Finance, B.Com, M.Com, Occupation- Service in Edelweiss Ltd., Gotra : Self- Rajoriya, Mama- Badariya, Contact : 305-A, Wing Samriddhi Tower Indralok, Phase 8, Bhayandar East, Mumbai-401105, Mob.: 9819391454, 9819327962, Email : rahul.jain902@gmail.com *(Jan.)*

★ **Arpit Jain** S/o Sh. Narendra Kumar Jain, DoB 12.09.1992 (at 8:31 am, Jaipur), Height 5'-7", Education- M.Tech, pursiuing Ph.D. IIT Hyderabad, Occupation- IC Layout Designor in Synopsys Hyderabad, Package 20 LPA, Gotra : Self- Ladoriya, Mama- Bayaniya, Contact : Ward No. 7, Jain Colony, Kajodi Ka Mohalla, Kherli, Alwar, Mob.: 9413907815, Email : arpitkherli@gmail.com *(Jan.)*

★ **Karan Jain** S/o Sh. Tikam Jain, DoB 24.01.1994 (at 7:58 pm, Alwar), Education- B.Com, PG Diploma in Banking & Finance, Job- Relationship Manager in ICICI Bank, Alwar, Income 5.6 LPA, Gotra : Self- Maimuda, Mama- Kaloniya, Contact : 316, Arya Nagar, Alwar, Mob.: 9414367669, 7726884348 *(Jan.)*

★ **Aayush Jain** S/o Sh. Ajeet Kumar Jain, DoB 25.04.1993, Height 5'-4.5", Education- B.Tech (Electrical), Working as System Anatyst in Crisil Pvt. Ltd. Mumbai, Package 6.10 LPA, Gotra : Self- Janutharia, Mama- Barbasia, Contact : 21/1048, Indira Nagar, Lucknow, Mob.: 9412850182, 9457465002 *(Jan.)*

★ **Abhishek Jain** S/o Sh. Rajendra Kumar Jain, DoB 06.11.1991, Height 5'-10", Education- B.Com, C.A., CS (pursuing), Working as Credit Manager in ICICI Bank at Jaipur, Income 7.5 LPA, Gotra : Self- Badvasia, Mama- Baderia, Contact : A-28, Dadudayal Nagar, Mansarovar, Jaipur, Mob.: 9413630825, 6375090668 *(Jan.)*

★ **Nitin Jain** (Divorced) S/o Late Sh. Munna Lal Jain, DoB 12.12.1986 (at 4:05 am, Agra), Height 5'-11", Education- MBA (UPTU), M.Com., LLB, Working in University Study Center, Khandari Agra, Gotra : Self- Chandpuriya, Mama- Maimura, Contact : Smt. Laxmi Jain, Sector 5, Bodla, Agra, Mob.: 808182831, 9634530430 *(Jan.)*

* * * * *

भावभीनी श्रद्धांजलि

पूज्य पिताजी स्व. श्री नैमीचन्द जी जैन
(स्वर्गवास : 06.12.1972)

पूज्य माताजी स्व. श्रीमती सावित्री जी जैन
(स्वर्गवास : 08.08.2018)

निवासी : भरतपुर

हम सभी परिवार के सदस्य आपको सादर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए वीर प्रभु से आपकी चिर आत्मीय शांति की प्रार्थना करते हैं।

श्रद्धावनत

पुत्र-पुत्रवधु :
अनिल कुमार-सुशीला जैन
(सेनि. उपप्रबंधक, भारतीय स्टेट बैंक)
मो.: 8003591731

पौत्र-पौत्रवधु :
नितिन कुमार-प्रीति कुमारी जैन
(वरिष्ठ प्रबंधक, यूको बैंक)
मो.: 9829885944

प्रपौत्र :
अरिहंत (ईशान) जैन

पौत्री-दामाद :
भारती-स्व. ऋषि रतन
राजुल-आशु

प्रपौत्र, प्रपौत्री :
यश, वाणी, मिकुल

निवास : 23-ए, विनायक विहार, मुहाना मण्डी रोड, जयपुर-302020
ए-26, दादूदयाल नगर, मुहाना मण्डी रोड, जयपुर-302020

अहिंसा परमो धर्मः

भावभीनी श्रद्धांजलि

स्व. श्रीमती शीला देवी जी जैन

(स्वर्गवास - 24.12.2020)

आपके स्नेह, सद्व्यवहार, धर्म परायणता को हम सभी शत्-शत् नमन करते हुए आपको सादर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

श्रद्धावनत

अमरचंद जैन दिवान, *अलवर वाले*
(पति)

पुत्र-पुत्रवधु :
अनिल जैन-अनिता जैन
पवन जैन-खुशबू जैन
पौत्र, पौत्री :
सचिन, मोनिका, तनू,
आदित्य, इशिका

पुत्री-दामाद :
सीमा जैन-दयाचंद जैन
नवासा, नवासी :
हिमांशु, सुरभि

नवासी-नवासी दामाद :
स्वाती-गौरव जैन
निवान *(नवासी पुत्र)*

निवास : ए-39, तुलसी नगर, शास्त्री नगर, जयपुर-302016

(CR D-2448)

श्री महावीराय नमः

१वीं पुण्यतिथि पर भावपूर्ण श्रद्धांजलि

स्व. श्रीमती विनोद कुमारी जी जैन

(स्वर्गवास : 20 फरवरी 2012)

धर्मपत्नी : श्री विनय कुमार जैन,

पुत्रवधु : स्व. श्री वैनी प्रसाद जैन (मलपुरा)

हम सभी परिवारजन आपको स्मरण करते हुए श्रद्धापूर्वक नमन करते हैं।

श्रद्धावनत

पुत्र-पुत्रवधु :
पंकज जैन-अन्जू जैन
अशोक-कीर्ति जैन

देवर-देवरानी :
दिनेश-विमला जैन, राकेश-सरोज जैन
अजति-वीना जैन

पौत्री : वानिषा, हर्षिता, यशस्वी, तनु, कृति, मनु, आगम

पुत्री-दामाद :
सीमा-सुरेन्द्र कुमार जैन
वीना-पारस जैन

निवास

प्रथम मंजिल सुपर मार्केट, एन.टी.सी. गेट, चर्च के पास, रावतभाटा
फोन-01475-235768, 9414185965, 9460742828, 8058092999

Firm :

Contact us For Free Consultation...
and you get a special gift voucher for you...!!

Nutrition Hai Zaruri *By Dietician* KIRTI JAIN
A unique diet clinic

Special Gift Voucher
₹500*

We change your diet and you will see changes in your life.....!!!

DIET PLAN *for* Obesity	DIET PLAN *for* Diabetes	DIET PLAN *for* High Cholesterol	DIET PLAN *for* PCOD & Thyroid	DIET PLAN *for* Blood Pressure

634-A, Prince Road, Opp. Brown Bites Restaurant, Vaishali Nagar, Jaipur • 9884315705

KOTSONS

POWER & DISTRIBUTION

TRANSFORMERS

Export Award Winners

ACHIEVED 100% GROWTH IN A SINGLE YEAR

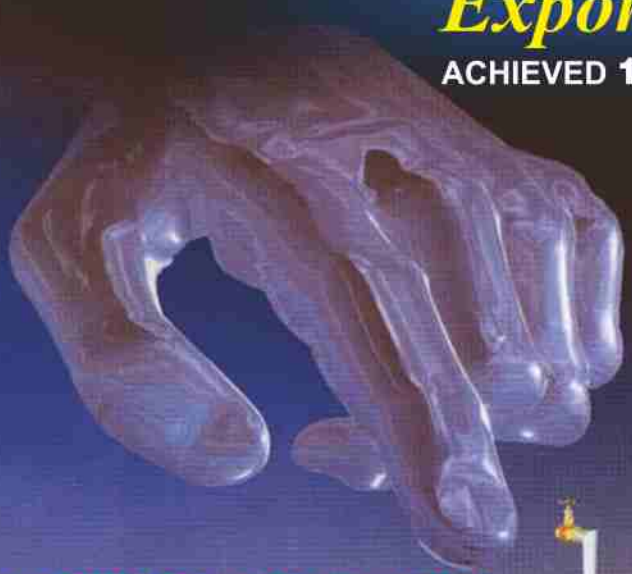

KOTSONS PVT. LTD.

(AN ISO 9001 : 2015 & ISO 14001 : 2015 CERTIFIED COMPANY)

Head Office and Unit-I
Alwar : 217A, 218 to 220 & 230A MIA,
Desula, Alwar-301030
Rajasthan, INDIA
Tel.: +91-144-2881210, 2881211
Email : kotsons@kotsons.com

Unit-II
Agra : C-21, U.P.S.I.D.C., Site-C,
Sikandra, Agra-282007,
U.P., INDIA
Tel.: +91-562-2641422, 264-1675
Email : kotsons@kotsons.com

Registered Office :
New Delhi : A-208 IInd Floor,
R.G. City Centre, Motia Khan,
Pahar Ganj, New Delhi-110055, INDIA
Tel.: +91-011-43537540
Email : kotsons@kotsons.com

DNV

Accredited by the RvA

ISO 9001 QUALITY CERTIFIED
CERTIFICATE No. QSC-3360

OHSAS 45001 : 2018

TRANSFORMING ELECTRICITY
EMPOWERING WORLD

RNI NO. RAJHIN/2012/47438 Postal Registration No. JAIPUR CITY/434/2019-21

RERA Registration No.
RAJ/P/2019/1054
www.rera.rajasthan.gov.in

Pearl
Build Trust & Loyalty

Pearl
FORTUNE
3 BHK Boutique Apartments

Your perfect home is now
at a landmark address.

16 Smart Home 3 BHK Vastu Friendly | Site : B-138, Mangal Marg, Bapu Nagar, Jaipur

Pearl
Build Trust & Loyalty

Pearl India Buildhome (P) Ltd.
"Pearl Suryavanshi", 401, A-5, Sardar Patel Marg,
C-Scheme, jaipur - 302001. INDIA, Ph.: +91 141 4014044

Dr. Raj Kumar Jain +91 9414054745
Ar. Vijay Kumar Jain +91 9829010092

2 Decades of Excellence | 3600 Villas + Plots | More than 500 Apartments | 22 'Pearl' Tower | 6 Townships

PRINTED MATTER
If Undelievered, please return to
श्री चन्द्रशेखर जैन *(संयोजक)*
86, श्री विहार कॉलोनी होटल क्लार्क,
आमेर के पीछे, जे.एल.एन. मार्ग,
जयपुर-302018 (राज.)

पत्रिका स्वामी - अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा (रजि.) के लिए मुद्रक/प्रकाशक श्री चन्द्रशेखर जैन, 86, मगन विला, श्री विहार कॉलोनी, होटल क्लार्क आमेर के पीछे, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर-302018 ने गणेश आर्ट प्रिंटर्स, जे-51, कृष्णा मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर से मुद्रित, सम्पादक : श्री प्रकाश चन्द जैन।